वर्ष-5, अंक-3

बाल किलकारी

जून, 2022

सहयोग राशि : 20/- रुपये

- कविता • कहानी
- तुम्हारी रचना • जीवनी

- वीरता का रहस्य
- नहीं चाहिए गुलेल
- खेल हवा का
- मेरा प्यारा ठेला

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर

किलकारी
बिहार बाल भवन

तुम्हारी पेंटिंग

चंदन कुमार

अंकित

शुभम राज

तन्नु

वर्ष–5, अंक–3
बच्चों की मासिक पत्रिका

बाल किलकारी

जून, 2022

चिट्ठी–पत्री		2
संपादकीय		3
कार्टून का पन्ना		4
कविता		
□ वीरता का रहस्य	– डॉ. श्यामनंदन किशोर	5
□ खेल हवा का	– घमंडीलाल अग्रवाल	20
□ पेड़ लगाएँ हम	– मु. जलालुद्दीन खान	21
□ कुकडू कू	– रुपाली सक्सेना	21
□ ये गर्मी के मीठे फल	– सतीश उपाध्याय	22
□ गौरैया	– उदय मेघवाल 'उदय'	22
कहानी		
□ ज्ञान का खजाना	– गोविन्द भारद्वाज	7
□ मेरा देश	– रंजना जायसवाल	10
□ स्कूल ड्रेस	– टीकेश्वर सिन्हा 'गब्दीवाला'	12
□ नहीं चाहिए गुलेल	– मनोहर चमोली 'मनु'	15
□ ऐसे सुधरा चिंटू	– रीता कौशल	32
□ दो जुगनू एक तितली	– मंजु महिमा	34
□ भूरा	– वंदना गुप्ता	38
□ अहंकारी वृक्ष	– मधुबाला सिन्हा	41
□ मेरा प्यारा ठेला	– संदीप पांडे	43
□ अपने कर्म अपने हिस्से	– कुमार गौरव अजीतेन्दु	45
परिवेश		
□ इमली	– शिवचरण चौहान	18
तुम्हारी रचना		23
जीवनी		
□ गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर	– हरीश चंद्र पांडे	27
बोध कथा		
□ क्रोध पर विजय	– संजीव कुमार आलोक	30
प्रेरक प्रसंग		
□ बापू ने औरों को भी निडर बनाया	– डॉ. राजेन्द्र प्रसाद	47

आवरण चित्र
सुनील श्याम (मध्यप्रदेश)

चिट्ठी–पत्री

• **बाल किलकारी** मेरी मनपसंद पत्रिकाओं में से एक है। मैं **बाल किलकारी** के सभी अंक पढ़ता हूँ और उन पर चिट्ठी भी लिखता हूँ। वे चिट्ठियाँ कई अंकों में प्रकाशित भी हुई हैं। इस अंक का संपादकीय 'टू नेचर–विद लव' पढ़ा जो मुझे पसंद आया। 'कार्टून का पन्ना : टिल्लू' भी मैंने पढ़ा जो मुझे किलकारी का एक विज्ञापन लगा। किलकारी में कितनी सृजनात्मक, रचनात्मक और मजेदार गतिविधियों को खेल–खेल में सिखाया जाता है, पाठक यह जानेंगे। इस अंक की कविताओं में 'पानी', 'फूल', 'प्यारी नानी', 'मेरा बस्ता', 'सूरज आया' जैसी कविताएँ पढ़ीं जो मुझे अच्छी लगीं।' कहानियों में 'पत्थर दिल', 'कैसे बने दोस्त' जैसी कहानियाँ पढ़ीं और मुझे बहुत मजा आया इन्हें पढ़ने में। 'जानकारी–चॉकलेट क्या है?' मैंने पढ़ी जिसमें मुझे चॉकलेट के बारे में कई सारी जानकारियाँ मिलीं। अंत में मुझे यह अंक बहुत अच्छा और मजेदार लगा।

– आदित्य राज, कक्षा–आठवीं, रजा हाई स्कूल, पटना

• मई माह की **बाल किलकारी** हर बार की तरह इस बार भी मुझे मजेदार लगी। मुझे सबसे अच्छी ज्ञानदेव मुकेश जी की कविताएँ लगीं तथा कुछ हमारे दोस्तों की रचनाएँ भी जैसे– 'गौरेया रानी' और 'पत्थर दिल' कहानी। जब मैंने जीवनी पढ़ी तो काफी अच्छी लगी इसलिए मैं टीम को धन्यवाद कहना चाहता हूँ कि हमारे लिए हर बार अच्छी–अच्छी जानकारियाँ तथा रचनाएँ लाते रहें।

– हर्षित राज, कक्षा–9वीं, बिहार बाल भवन किलकारी, पटना

• संपादक महोदय को मेरा प्रणाम! इस माह की पत्रिका मजेदार थी। पढ़कर अच्छा लगा। पत्रिकाओं में कविता और कहानियों में से मुझे कविता पढ़ने की बहुत जल्दबाजी रहती है। सारी कविताओं में से मुझे सबसे ज्यादा पसंद आने वाली कविता 'प्यारी नानी' लगी। मुझे अपनी नानी की कहानियाँ याद आईं जो वो सुनाती थी राजा–रानी की, साथ ही और भी कई सारी। मुझे एक कहानी जो कि अच्छी लगी, वो 'गणित का जादूगर' है। इस कहानी में शुरू में ही मैथ्स के बारे में कुछ बताया गया है और मुझे मैथ्स बिलकुल पसंद नहीं है, पर कहानी बहुत पसंद आई। आशा करती हूँ आप अगली बार भी मजेदार रचनाएँ प्रकाशित करेंगे।

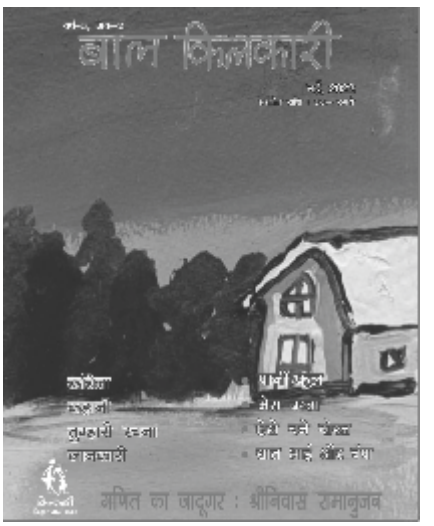

– साक्षी, कक्षा–8वीं, टेंडर हर्ट्स सिनियर स्कूल

संपादकीय

कहावतें कुछ कहती हैं

प्यारे बच्चो,

'नाच न जाने आंगन टेढ़ा', 'अधजल गगरी छलकत जाए',

'बिन मांगे मोती मिले, मांगे मिले न भीख', 'हाथी चले बाजार कुत्ता भौंके हजार...'

ऊपर लिखी उक्तियाँ तो आए दिन सुनते होगे। उनका कुछ-कुछ मतलब भी समझते होगे कि इनका उपयोग किसी बात को कम-से-कम शब्दों में समझाने के लिए किया जाता है। इस बात को भी बताने के लिए अक्सर कहा जाता है – 'थोड़ा कहा ज्यादा समझना', यानी जो बात थोड़े शब्दों में कही गई है उसके बड़े मतलब निकालना या समझना।

आओ, इन उक्तियों का अर्थ समझने की कोशिश करते हैं। 'नाच न जाने आंगन टेढ़ा' – इसका क्या अर्थ हुआ? इसका अर्थ यह हुआ कि कोई व्यक्ति अपनी असफलता या असमर्थता छुपाने के बहाने खोज रहा है। अब किसी को नाचना न आए और इसके लिए वह यह बहाना करे कि खोट उसके नाच में नहीं है, बल्कि आंगन, वह जमीन जिस पर वह नाच रहा है, वही टेढ़ी है!

उसी प्रकार 'अधजल गगरी छलकत जाए' का अर्थ है अल्प ज्ञान वाले व्यक्ति ज्यादा ज्ञान बघारते हैं। तुमने देखा और अनुभव किया होगा कि गगरी या घड़ा जब पानी से भरा रहता है तब पानी इसमें से छलकता नहीं, लेकिन पानी अगर उसमें कम रहे तो वह छलक कर बाहर गिरता रहता है। पानी यहाँ ज्ञान का, समझदारी का प्रतीक है। जो सचमुच समझदार या ज्ञानी होते हैं वह गंभीर होते हैं, जरूरत के अनुसार ही अपनी बात कहते हैं। दूसरी ओर एक कम पढ़ा-लिखा आदमी खुद को ज्यादा होशियार दिखाने की कोशिश करता पाया जाता है। इससे उस व्यक्ति का सम्मान बढ़ने की बजाय और घट ही जाता है।

यह उक्तियाँ और कुछ नहीं बल्कि कहावतें हैं जिन्हें सीख के रूप में न जाने कब से एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी को सौंपती चली आ रही है। कहावतों में एक समाज अपना अनुभव कहता है। हर समाज की अपनी कहावतें होती हैं, लेकिन यह भी जान लेना चाहिए कि कुछ कहावतें ऐसी होती हैं जो समूचे मनुष्य समाज पर लागू होती हैं। जिन कहावतों की यहाँ चर्चा की गई, आखिर तो किसी भी देश या समाज के लिए उनका बराबर महत्व है। 'हाथी चले बाजार कुत्ते भौंके हजार' का मतलब तो यही है न कि बुद्धिमान व्यक्ति लोग क्या कहते हैं, इसकी परवाह न कर अपना काम करते जाते हैं! तो यह बात दुनिया के हर बुद्धिमान व्यक्ति पर लागू होती है, भले उसे कुछ दूसरे शब्दों में कहा जाए।

अब यह बताओ कि कभी कुछ देख-सुनकर तुम्हारे हाथों के तोते उड़े कि नहीं? 'हाथों के तोते उड़ना' – यह उक्ति कुछ अलग बात कहती है, इस पर फिर कभी बात करेंगे!

अपने कुछ ऐसे अनुभवों के बारे में लिखो जिन्हें तुम कुछ विशेष मानते हो। 'तुम्हारी रचना' स्तंभ में उनका प्रकाशन किया जाएगा। मजे में होगे।

तुम्हारा
शिवदयाल

कार्टून का पन्ना : टिल्लू

वीरता का रहस्य

डॉ. श्यामनंदन किशोर

बहुत दिनों की बात, एक दिन गहन विजन के भीतर
श्वेत शिला के पास एक खरगोश गया जोड़े कर;
बोला 'श्रीमान् सुना आप हैं दाँत बनाते सुन्दर
क्या दो दाँत प्रसाद रूप में पा सकता यह अनुचर?'

पत्थर बोला, 'अरे दाँत हैं तेरे सही सलामत।'
'जी–हाँ ये हैं सुन्दर' बोला शशक और होकर नत;
'किन्तु मुझे बेचैन बनाती आज और ही बात!
मुझे चाहिये बज्रसदृश मृगपति के पैने दाँत।'

'क्यों, ऐसी क्या बात?' – पूछ बैठा विस्मित पाषाण।
'सदा लोमड़ी से लगता भय बहुत मुझे श्रीमान्!
उसे देखने भाग खड़ा होता रख सिर पर पाँव!
जरा कृपा कर दें, हारूँगा अब न कभी मैं दाँव।

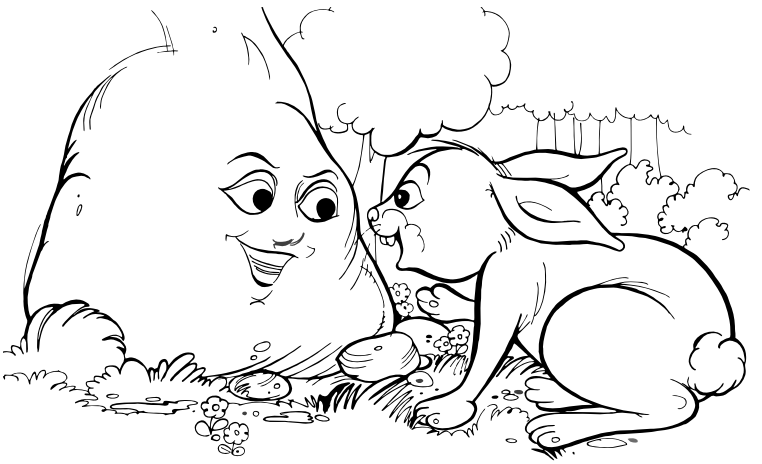

ठेठ होंगे मुझे देखकर अब बच्चू के होश!
दैन्य भाव से लगा देखने इतना कह खरगोश।
हँस पत्थर ने लगा दिये दो दाँत बड़े खूँखार।
थिरक उठा खरगोश सिन्धु-दर्पण में उन्हें निहार।

सीना तान शशक निकला घूमने आज आजाद।
पड़ी दिखायी एक लोमड़ी कुछ क्षण के ही बाद।
किन्तु धड़कने लगा हृदय, डरकर भागा खरगोश,
औ' पत्थर के पास लगा कहने, "न मुझे संतोष;

और भयंकर दाँत लगा दें करूँ सामना डटकर",
लेट गया अधमरा बना वह पास शिला के सटकर।
"नही दाँत, परिवर्तित करना दिल होगा नादान।
तभी समस्या सुलझेगी तेरी", बोला पाषाण।

"भेड़ न बनती वीर भेड़िया के दल में चुपके मिल!
नहीं वीरता ली उधार जाती है, समझा बुजदिल!
अस्त्र-शस्त्र निस्तेज किसी कायर के लगकर हाथ,
साहस ही वह वस्तु कि जो रण में देती है साथ।

साहस है वह तेज, फूटती जो बन खूँ की ज्वाल।
साहस ही वह शक्ति, बनाती है जो हृदय विशाल।
कहीं शत्रु से हो जाए यदि सहसा कभी भिड़न्त,
हिम्मत की तलवार चाहिए, नहीं मात्र नखदंत।"

* पद्मश्री श्यामनंदन किशोर (1932-1985, मुजफ्फरपुर, बिहार) प्रख्यात कवि, आलोचक और शिक्षाविद् थे। उन्होंने बच्चों के लिए भी लिखा। प्रस्तुत कविता उनकी प्रसिद्ध बाल रचना है।

अर्थ : गहन विजन – घना वन / **कर** – हाथ / **अनुचर** – सेवक / **शशक** – खरगोश / **सदृश** – जैसा / **मृगपति** – सिंह / **विस्मित** – चकित / **पाषाण** – पत्थर / **दैन्य** – दयनीय / **सिन्धु-दर्पण** – पानी का आइना / **निस्तेज** – जिसमें तेज न हो।

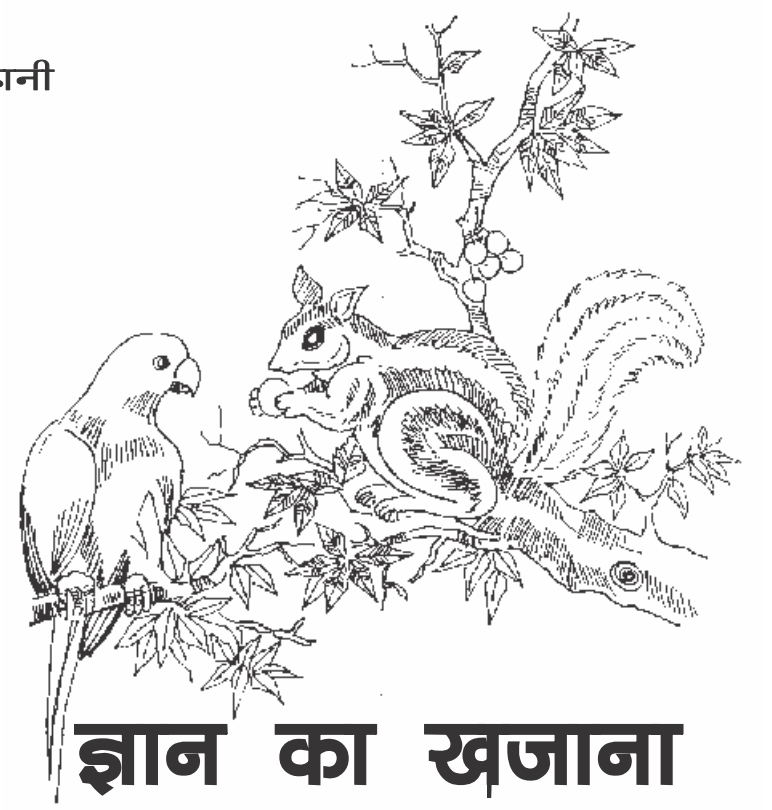

ज्ञान का खजाना

गोविन्द भारद्वाज

गिल्लू गिलहरी आज सुबह से बड़ी व्यस्त थी। उसे नीम के पेड़ की ट्हनियों पर दौड़ते भागते सब देख रहे थे। हीरू तोते ने पूछा, ''गिल्लू आज तो बहुत भाग दौड़ कर रही हो...।'' ''हाँ.. हीरू भैया कल पुस्तक दिवस है इसलिए...।'' गिल्लू ने जवाब दिया। ''पुस्तक दिवस.. ?'' हीरू ने पूछा।

''अरे भैया..पुस्तक अर्थात किताब पढ़ने वालों में रूचि जाग्रत करने और पुस्तकों के रख रखाव, उनकी लोकप्रियता बढ़ाने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय पुस्तक दिवस मनाया जाता है।'' गिल्लू किताबों को उठाते हुए बोली। हीरू उड़कर उसके पास आया तो उसे बहुत आश्चर्य हुआ। नीम के बड़े से कोटर में गिल्लू ने किताबों का ढेर लगा रखा था। ''अरे इतनी सारी किताबें, कौन पढ़ेगा इनको?'' हीरू तोते ने कहा। ''कौन पढ़ेगा...हम सब पढ़ेंगे...मधुवन के सारे पशु और पंछी पढ़ेंगे।'' गिल्लू गिलहरी ने पूँछ को हिलाते हुए कहा।

अगले दिन गिल्लू गिलहरी ने मधुवन में नीम के पेड़ पर एक भव्य पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया। दूर-दूर से पुस्तकप्रेमी अपनी अपनी पसंद की किताबें खरीद रहे थे। ''गिल्लू यह किताब कितने की है?'' कूकी कोयल ने पूछा। ''कूकी बहन, ये मात्र बीस रूपए की है।'' गिल्लू ने कहा। ''किंतु इस पर तो चालीस रूपए लिखे हैं।'' कूकी बोली। ''अरी बहन जी.. पुस्तक दिवस पर पचास प्रतिशत की छूट मिल रही है।''

गिल्लू ने जवाब दिया। देखते-ही-देखते गिल्लू की प्रदर्शनी में ग्राहकों की भीड़ लग गयी।

अचानक एक बंदरों की टोली वहाँ आ गयी। उन्होंने किताबों को उलट-पलट कर देखना शुरू किया। कुछ बंदर तो किताबों के पन्ने फाड़ने लगे। ''अरे यह क्या कर रहे हो तुम सब... ?'' गिल्लू ने उन्हें टोकते हुए कहा। ''यह क्या बकवास लगा रखी है....जंगल के निवासी कोई किताब पढ़ते हैं...बड़ी आई... पुस्तक बेचने वाली।''

लालू बंदर ने कहा। ''देखो लालू भैया मुझे कुछ भी कह लो...लेकिन... लेकिन मेरी किताबों को फाड़ो मत। ये मेरी पूँजी हैं...ज्ञान का खजाना हैं।'' गिल्लू गिलहरी ने हाथ जोड़कर कहा। ''अरे हम सब जंगली हैं जंगली...हमें ज्ञान किताबों से नहीं अनुभवों से मिलता है। हम कोई मानव नहीं, जो पढ़ने लिखने का नाटक करें।'' ''नाटक मतलब... क्या मनुष्य पढ़ने का सिर्फ नाटक करते हैं ?'' हीरू ने पंख फड़फड़ाते हुए पूछा।

लालू ने आगबबूला होते हुए कहा, ''हाँ.. हाँ... मनुष्य ने पढ़ने का ढोंग ही किया है... बड़ी-बड़ी डिग्रियाँ लेकर भी वे अज्ञानी हैं।'' ''कैसे लालू भाई ?'' कूकी ने बड़ी शांति से पूछा। ''इन किताबों को पढ़कर लोगों ने जात-पात, धर्म के नाम पर लड़ना और लड़ाना सीखा है। अमीर-गरीब की खाई को गहरा किया है...। भाषा, क्षेत्र और सभ्यता के नाम पर एक-दूसरे से लड़ते आए हैं..क्या हम अनपढ़ रहकर भी उनके जैसा व्यवहार करते हैं।'' लालू ने समझाने के अंदाज में कहा।

इस पर गिल्लू गिलहरी बोली, ''लालू भैया...बात तो तुम ठीक कह रहे हो... लेकिन इसमें किताबों का क्या दोष ? किताबें तो ज्ञान का भंडार हैं..ये कभी गलत रास्ते पर जाने के लिए नहीं कहती... इसमें लिखी बातों पर अमल किया जाए, तो संसार में कभी भी कहीं भी अत्याचार नहीं हो...।'' ''गिल्लू ठीक कह रही है. .. लालू... देखो इनमें कितनी अच्छी-अच्छी और ज्ञानवर्धक बातें लिखी हुई हैं।'' हीरू तोते ने कुछ किताबों को दिखाते हुए कहा।

''अरे ज्ञानी हीरू.. आजकल तुम टीवी देख यह हो इन दिनों, या अखबार पढ़ रहे हो... पढ़े लिखे विकसित देश आपस में घातक हथियारों से लड़ रहे हैं।'' लालू ने कहा। ''कौन.. कौन लड़ रहे हैं ?'' चीनू चिड़िया ने पूछा, ''जो अभी तक सबकी बातें बड़ी ध्यान से सुन रही थी।'' लालू बोला, ''यूक्रेन और रूस का नाम सुना है तुम सब ने ?'' ''हाँ..मैंने इनके बारे में पढ़ा है किताबों में।''

''हाँ..वही दोनों पढ़े-लिखे समझदार और विकसित देश आपस में एक दूसरे को नष्ट करने पर तुले हैं। सुना है वे परमाणु हथियारों का इस्तेमाल भी कर सकते हैं..यह पूरी दुनिया के लिए खतरनाक होगा।'' लालू ने एक किताब को फेंकते हुए कहा।

''यह बात तो तुम सच कह रहो लालू... लेकिन इसमें सभी पढ़े-लिखों या फिर किताबों को दोष देना बिल्कुल गलत है...। किताबें तो हम सब की सच्ची मित्र हैं...हमारी मार्गदर्शक हैं. .।'' गिल्लू ने बड़े प्यार से समझाया। ''मान जाओ लालू... एक-दो किताब पढ़कर देखो...

अपने साथियों को समझाओ... किताबें फाड़ना पाप है पाप...।'' कुकी ने गिल्लू का साथ देते हुए कहा।

इतनी देर में एक किताब पर लालू की नजर आई। उसे उठाते हुए बोला, ''यह कौन सी किताब है...गिल्लू। इसमें हमारे पूर्वजों की तस्वीर कैसे?'' ''यह रामचरित मानस है भैया...।'' गिल्लू बोली। ''वही रामचरित मानस जिसमें हमारे पूर्वजों ने अन्याय के विरुद्ध भगवान का साथ दिया था।'' लालू ने कुछ याद करते हुए कहा।

''हाँ... भैया...।'' गिल्लू गिलहरी ने जवाब दिया। लालू ने सभी बंदरों को किताबों को न छेड़ने का आदेश दिया।

फिर सभी ने एक-एक किताबें खरीदीं। लालू ने गिल्लू से माफी माँगी और वहाँ से चला गया।

देखते-ही-देखते गिल्लू की सारी किताबें बिक गईं।

■■■

कहानी

मेरा देश

रंजना जायसवाल

एक छोटे से शहर में चीनू नाम का लड़का रहता था। चीनू बहुत ही शरारती बच्चा था। एक जगह पर शांति से बैठना जैसे उसे आता ही नहीं था। उसकी इस हरकत से घर, स्कूल और मुहल्ले के लोग भी परेशान रहते थे। कुत्ते की पूँछ मरोड़ देना, गाय को पत्थर मार देना उसके लिए खेल की तरह था। स्कूल और घर में भी वो अक्सर पानी का नल खुला छोड़ देता। कॉपी को फाड़कर हवाई जहाज बना कर उड़ा देना उसका पसंदीदा शौक था।

हर दिन कोई-न-कोई उसकी शिकायत लेकर घर आता ही रहता था। चीनू की माँ ने उसे हर तरह से समझाने की कोशिश की पर चीनू हर बार माँ से वादा करता कि आगे से वो ऐसी कोई भी शैतानी नहीं करेगा, पर चीनू तो चीनू ही था। आज सुबह से माँ चौके में लगी थी।

''अरे वाह माँ! ढोकला बना रही हो? कितना प्यारा रंग है! आज कुछ है क्या.... ?''

प्लेट में तीन रंग के ढोकले रखे थे केसरिया, सफेद और हरा ....

माँ ने चीनू की तरफ प्यार से देखा, ''चीनू! इस ढोकले को देखकर तुमको किसकी याद आती है, जल्दी से बताओ।''

चीनू सोचने लगा - ये रंग कहीं तो देखा है। वो खुशी से उछल पड़ा।

''माँ! ये तो हमारे देश के झंडे का रंग है? हमारे स्कूल की छत पर लगा रहता है।''

''बहुत बढ़िया...''

माँ ने चीनू की गाल को प्यार से थपथपाया और ढोकले का एक टुकड़ा उसके मुँह में डाल दिया।

''आज 15 अगस्त है यानी स्वतंत्रता दिवस। आज के दिन हमारे देश को आजादी मिली थी, इसी खुशी में चीनू के पसन्द के ढोकले बने हैं। जानते हो चीनू, यह हमारा राष्ट्रीय त्योहार भी है।''

चीनू आश्चर्य से माँ की बातें सुन रहा था।

''चीनू! जरा टी.वी. तो चालू करो, आज परेड आ रही होगी।''

चीनू बन्दर की तरह झट से उछलकर टी.वी. के पास पहुँच गया, एक जैसे यूनिफॉर्म में सैनिक कदमताल करते हुए प्रधानमंत्री को सलामी दे रहे थे। प्रधानमंत्री ने लाल किले की प्राचीर से देश को सम्बोधित किया, तभी आसमान से हेलीकॉप्टर से जनता पर फूलों की वर्षा की गई। हवाई जहाज तीन रंग का धुंआ (केसरिया, सफेद और हरा) उड़ाते हुए आसमान में गुम हो गए। कितना रोमांचकारी था ये सब...।

''माँ–माँ! वो आगे वाले सैनिक को देखो, उसके सीने पर कितने सारे मेडल हैं!''

''चीनू! जिस तरह से तुम अपने स्कूल में जब कोई अच्छा काम करते हो तो तुम्हें सर्टिफिकेट और अवार्ड दिया जाता है न...ठीक इसी तरह से इनको भी इनकी वीरता और देश की रक्षा करने के लिए सम्मानित किया जाता है। आज इन्हीं लोगों की वजह से हम सुरक्षित हैं और अपने घरों में चैन से सो पाते हैं।''

माँ की बात सुनकर चीनू उत्साह से भर गया।

''माँ! मैं भी बड़ा होकर सेना में भरती होऊँगा और देश की सेवा करूँगा।''

चीनू एक सिपाही की तरह माँ की आँखों के सामने खड़ा हो गया। अपने नन्हे से चीनू के मुँह से ये बात सुनकर माँ मुस्कुरा पड़ी।

''बेटा! सरहद पर जाकर युद्ध लड़ना ही देश सेवा नहीं है, ऐसे बहुत से काम है जो हम खुद करके या दूसरों को प्रेरित करके भी करें तो वो भी सच्ची देशभक्ति है।''

चीनू आश्चर्य से माँ को देख रहा था, उसकी छोटी–छोटी आँखों में ढेरों सवाल तैर रहे थे।

''वो कैसे माँ.... मुझे भी अपने देश की सेवा करनी है। मैं भी सच्चा देशभक्त कहलाना चाहता हूँ।''

माँ ने चीनू को अपनी गोदी में बिठा लिया और बड़े प्यार से उसके सर पर हाथ फेर कर कहा, ''चीनू! जरूरी नहीं कि हर कोई सिपाही बनकर हाथ में बन्दूक लेकर दुश्मनों से लड़े। हम लोगों को सत्य के पथ पर चलने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। अपने घरों के कूड़े को इधर–उधर न फेंक कर उन्हें निश्चित जगह पर रखे कूड़ेदान में डाल कर भी अपना कर्तव्य निभा सकते हैं। ब्रश करते, नहाते, बर्तन धोते वक्त अनावश्यक जल को बर्बाद होने से रोकना भी देश सेवा है। लोगों को प्लास्टिक के थैलों को छोड़कर जूट, कपड़े और कागज के बने थैलों का प्रयोग करने के लिए जागरूक करना और वातावरण को बचाने के लिए लोगों को पेड़ लगाने के लिए प्रोत्साहित करना भी देश सेवा है।''

''माँ! ये सब तो बहुत आसान है, मैं चुटकियों में ये कर सकता हूँ।''

चीनू खुशी से झूम उठा.... आज मानो उसे जीने का मकसद मिल गया था। सच्ची देशभक्ति क्या होती है, वह आज अच्छी तरह समझ गया था।

■■■

कहानी

स्कूल ड्रेस

टीकेश्वर सिन्हा 'गब्दीवाला'

सुरेखा अलगनी से सूखे कपड़े निकाल रही थी। दो तारों के ज्वाइंट में फँसकर प्रतीक का स्कूल ड्रेस-शर्ट और पैंट चर्र से फट गया। सुरेखा को बहुत दुःख हुआ और होना ही था, क्योंकि प्रतीक के पास एक ही जोड़ी स्कूल ड्रेस थी। अब प्रतीक को स्कूल जाने की चिंता होने लगी। वह नेताम सर की डाँट-डपट से वाकिफ था। लेकिन दोनों माँ-बेटा करते तो करते क्या? अब गलती तो किसी की नहीं थी। फिर सुरेखा बोली -''अब क्या करें बेटा फट गयी तुम्हारी स्कूल-ड्रेस तो। कल सुबह तुम्हारे स्कूल जाने से पहले सी दूँगी।'' सुरेखा का करुण स्वर सुनकर प्रतीक उससे लिपट गया।

दूसरे दिन सुबह प्रतीक स्कूल गया। प्रार्थना के पश्चात कक्षा में चुपचाप बैठा था। उसके दोस्त उससे बातें करते, पर वह चुपचाप ..हूँ..हूँ...करते हुए सर हिलाते जाता। उसकी खामोशी का कारण किसी को भी कुछ पता नहीं चला। तभी कक्षा शिक्षिका रेणुका मैडम आयी। प्रतीक को देख रेणुका मैडम बोली-''क्यों, तबीयत खराब है क्या जी? कैसा लग रहा है जी?'' प्रतीक के कुछ न बोलने पर रेणुका मैडम समझने लगी कि हो सकता है, इसकी मम्मी ने किसी बात पर इसे डाँटा होगा। प्रतीक के कंधे पर हाथ रखते हुए उसे खड़े होने के लिए कहा। प्रतीक बड़ी मुश्किल से खड़ा हुआ। जैसे ही रेणुका मैडम की उंगलियाँ शर्ट की फटी जगह पर पड़ी, प्रतीक सकुचाया और रेणुका मैडम को एकटक देखने लगा। रेणुका मैडम को बात समझ आ गयी। वह कक्षा से निकल ही रही थी कि उन पर कृषाण मैडम की नजर पड़ी। वह ठिठक गयी। बोली- ''क्या बात है रेणुका मैडम? आज प्रतीक कैसे चुपचाप

बैठा है अनमना-सा। तबीयत तो ठीक है न उसकी? उसकी मम्मी ने ऐसा तो कुछ नहीं बताया?'' कृषाण मैडम प्रतीक को अच्छी तरह जानती थी, क्योंकि उसकी मम्मी सुरेखा कृषाण मैडम के घर काम करती थी।

प्रतीक आठवीं कक्षा का छात्र था। सीधा-सादा प्रतीक पूरे स्कूल का एक चहेता बालक था। पढ़ाई-लिखाई में नम्बर वन। खेलकूद में भी पीछे नहीं था। वह गरीब जरूर था, पर ईमानदार था, बड़ा स्वाभिमानी था। कभी किसी से कुछ माँग कर नहीं खाता। दोस्तों से प्यार से मिली किसी चीज को नकारता भी नहीं। अपने पापा की अकस्मात हुई मौत के बाद से वह संकोची हो गया था। बहुत कम बात करता था। पढ़ाई-लिखाई से सम्बंधित बातें अपने दोस्तों से जरूर शेयर करता था।

लगभग पंद्रह दिन गुजर गये। उस दिन शनिवार था। सुबह स्कूल लगा था। छुट्टी के बाद कृषाण मैडम स्कूल से घर आयी। अपने बेटे सुशील से कहा-''बेटा! तू एक काम करना रे। अपनी पुरानी व्हाइट् शर्ट और नीली पैंट है न, उन्हें सुरेखा को दे देना खोजकर, उसके बेटे प्रतीक के लिए। उसकी स्कूल-ड्रेस फट गयी है। शायद अभी उसकी मम्मी नहीं खरीद पा रही है। दे देना बेटा उसे। वैसे भी तू उन्हें पहनता भी तो नहीं।''

''हाँ मम्मी...ठीक है...।'' कहते हुए सुशील बैट-बाल लेकर बाहर निकल गया। कृषाण मैडम बच्चों की अर्द्धवार्षिक परीक्षा का आंसर-शीट चेक करने में लग गयी। नौ-दस शीट ही चेक की थी, तभी ''दीदी...'' की आवाज लगाती हुई सुरेखा आयी। कृषाण मैडम चेकिंग में लगी रहीं और सुरेखा अपने काम में लग गयी। शाम को वह अपने घर के लिए निकल रही थी, तभी कृषाण मैडम बोली-''सुरेखा! इसे ले जा अपने प्रतीक के लिए, अभी पहनने लायक है।'' ''हाँ दीदी, ठीक है न, दे दो।'' सुरेखा ने न चाहते हुए भी पुरानी शर्ट-पैंट रख ली।

सोमवार को प्रतीक पुरानी शर्ट-पैंट पहन कर स्कूल गया। दूसरे पीरियड के बाद शॉर्ट रीसेस हुआ। सेकंड पीरियड कृषाण मैडम का था। वो क्लास में गयी। प्रतीक को देखकर उन्हें आश्चर्य हुआ, क्योंकि प्रतीक ने उनकी दी हुई शर्ट-पैंट नहीं पहनी थी। इस समय प्रतीक को कुछ बोलना उचित नहीं समझा। पीरियड की बेल बजते ही क्लास से निकल गयी। लंच के बाद उन्होंने पुरानी शर्ट-पैंट की बात को लेकर चौहान मैडम से प्रतीक के बारे में चर्चा की। फिर छुट्टी हो गयी।

तीन-चार दिनों तक कृषाण मैडम प्रतीक को फटी-ड्रेस में देखती रही। चौथे दिन उन्होंने घर में सुरेखा के पास अपनी बात रखी-''मैंनें जो स्कूल-ड्रेस तुम्हें दी थी, उसे प्रतीक को क्यों नहीं पहनाती?'' कृषाण मैडम की बात सुन कर सुरेखा को अजीब लगा। बोली - ''नहीं... दीदी... .! उसे प्रतीक रोज पहनता है। और स्कूल जाता है।'' कृषाण मैडम बोली-''लेकिन मैं तो उसे रोज उसी फटी ड्रेस पहने हुए देखती हूँ।'' फिर सुरेखा कुछ नहीं बोली। अपना काम निपटा कर घर चली गयी।

एक सप्ताह बीत गया। प्रतीक रोज अपनी ही फटी ड्रेस पहनकर स्कूल आता था। अब उसे कोई कुछ नहीं बोलता। उसकी पढ़ाई-लिखाई यथावत थी। लांग रीसेस के पश्चात विज्ञान का पीरियड लगा। कृषाण मैडम कक्षा आठवीं में गयी। ब्लैक बोर्ड पर ''पदार्थ की अवस्था'' मेन हेडिंग डाली। चॉक को उंगलियों से घुमाते हुए कुछ बोल ही रही थी कि उनकी नजर प्रतीक पर

पड़ी। देखा कि उसकी शर्ट का आस्तीन और अधिक फट गया था। उसे कुछ बोलना तो नहीं चाहती थी, फिर भी बोली – ''क्यों प्रतीक, मेरी दी हुई स्कूल–ड्रेस क्यों नहीं पहनता ? वह तो अभी पहनने लायक है बेटा।'' प्रतीक अब भी चुपचाप बैठा था। मैडम के बार–बार पूछने पर प्रतीक बोला – ''मैडम जी! मैं अपनी मम्मी का दिल दुखाना नहीं चाहता इसलिए उनके सामने मैं आपकी दी हुई ड्रेस को पहन लेता हूँ। घर से निकलते ही रास्ते में उसे निकाल कर अपनी शर्ट–पैंट पहन लेता हूँ। मुझे अच्छा नहीं लगता दूसरों की किसी चीज का उपयोग करना। यह सब मैंने अपने पापा जी सीखा है। वे स्वयं मुझे अपनी सायकल से स्कूल छोड़ते थे। जैसे भी हो, वे मेरे लिए हर चीज स्वयं खरीदते थे और उसे ही मैं अपना समझता था। मुझे अपनी ही वस्तु का उपयोग करना अच्छा लगता है। प्लीज मुझे माफ करना मैडम जी, मैंने आपकी दी हुई स्कूल ड्रेस नहीं पहनी। अपनी शर्ट–पैंट ही मेरे लिए अच्छी है।'' धाराप्रवाह बोलते हुए प्रतीक को कृषाण मैडम अपलक देख रही थी। जरा-सी उनकी दृष्टि नीची हुई कि उन्हें अपनी दी हुई शर्ट–पैंट प्रतीक के बैग में दिख गयी। अब तो प्रतीक को कुछ बोलना उन्हें उचित नहीं लगा। सच, आज कृषाण मैडम को ऐसा लगा कि प्रतीक से ही वह बहुत कुछ सीख गयी।

■■■

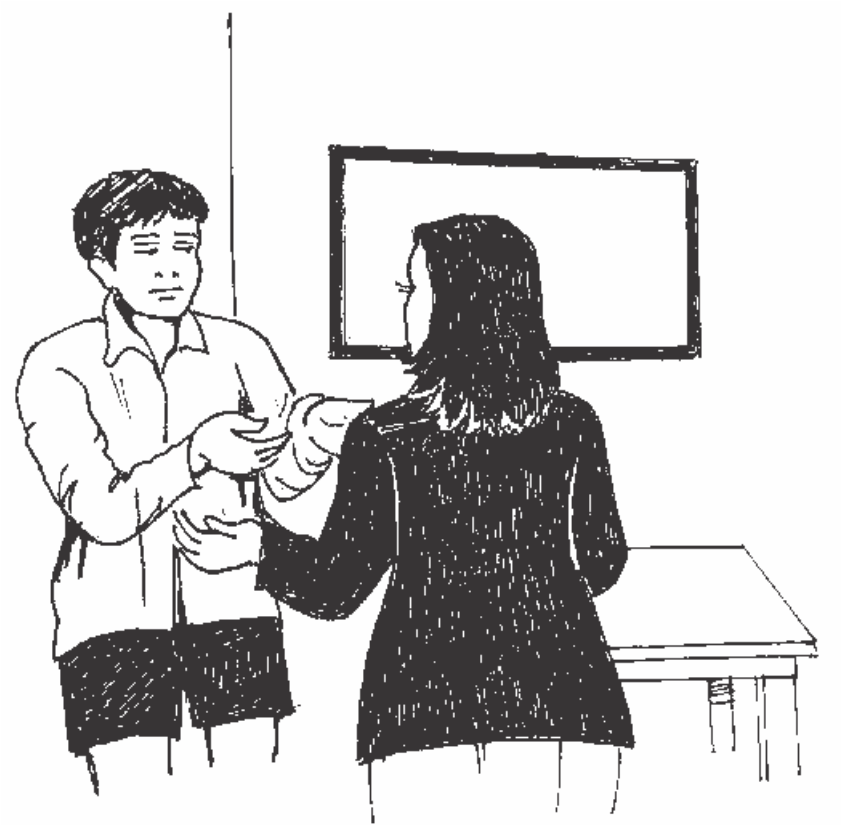

कहानी

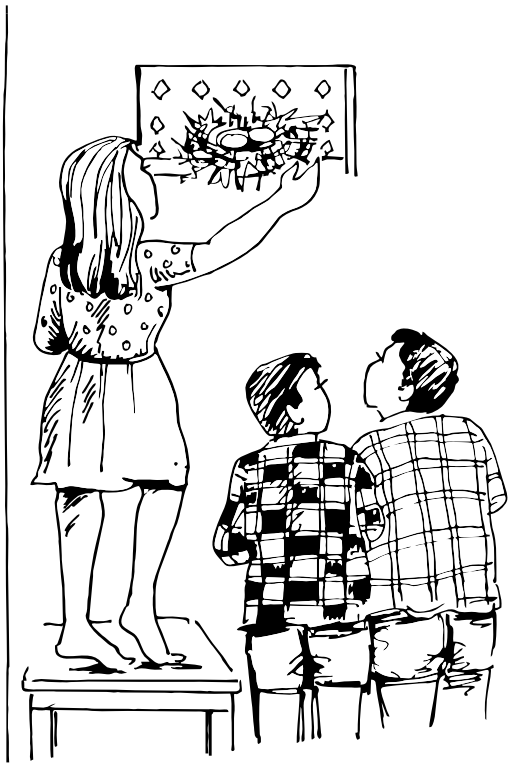

नहीं चाहिए गुलेल

मनोहर चमोली 'मनु'

बिलाल घर पर था। वह अपना स्कूल बैग खोल रहा था। स्कूल से होमवर्क मिला था जो उसे करना था। पढ़ते-लिखते हुए इधर-उधर देखना उसकी आदत थी। अचानक वह चिल्लाया -''अरे! हमारे घर के भीतर चिड़िया! लगता है यह घोंसला बना रही है। ये तो दो है!'' बिलाल की आवाज सुनकर रेहाना रसोई से दौड़कर आई। बिलाल रोशनदान की ओर देख रहा था। रेहाना ने भी उसी ओर देखा। वह खुश हो गई। बोलीं-''ये तो अबाबील है। दूर देश से यहाँ आई है। ये हमेशा यहाँ नहीं रहेगी। कुछ महीनों बाद वापिस चली जाएगी।'' बिलाल सोचने लगा -''इसका मतलब ये हमारे आस-पास की चिड़िया नहीं है। घूमने आई है! मैं इसे यहाँ नहीं रहने दूँगा।''

चिड़िया का जोड़ा मेहनती था। दोनों घोंसला बनाने में जुट गए। उन्होंने दिन-रात एक कर दिया। घर की बैठक वाले कमरे का एक कोना चुन लिया था। छत के तिकोने पर दोनों ने मिलकर घोंसला बना लिया। रेहाना ने बिलाल से कहा -''देखो। कितना सुंदर घोंसला बनाया है! पता है यह गीली मिट्टी से अपना घोंसला बनाती है। अब हम इन्हें चिक्कू और चिक्की कहेंगे।'' बिलाल ने पूछा -''अम्मी। ये अपनी चोंच में क्या ला रहे हैं?'' रेहाना ने बताया -''चिक्की अंडे देगी। घोंसला भीतर से नरम और गरम रहेगा। इसके लिए चिक्कू-चिक्की घास-फूस के तिनके, पंख और मुलायम रेशे ढूँढ-खोज कर ला रहे हैं।'' यह कहकर रेहाना रसोई में चली गई।

बिलाल ने मेज सरकाया। उस पर स्टूल रखा। स्टूल पर चढ़ गया। बिलाल ने छतरी की

नोक से घोंसला तोड़ दिया। मिट्टी से बना घोंसला भरभराता हुआ चूर-चूर हो गया। चिक्कू-चिक्की चिल्लाने लगीं। दोनों चिड़ियाँ कमरे के चारों ओर मँडराने लगीं। चिड़ियों का चहचहाना अलग बात है। शोर मचाना दूसरी बात है। वे दोनों चीख रही थीं। ''बिलाल। ये तुमने अच्छा नहीं किया। चलो हटो यहाँ से।'' रेहाना दौड़कर रसोई से आई। अजनबी चिड़िया की वजह से मुझे डाँट पड़ी है। बिलाल यही सोच रहा था।

शाम हुई तो रेहाना ने बिलाल को चाय-नाश्ता देते हुए कहा - ''चिक्कू-चिक्की फिर से अपना घोंसला उसी जगह पर बना रहे हैं। घास-फूस और गीली मिट्टी चोंच में ला-लाकर वह अपना घोंसला बनाते हैं। तिनका-तिनका जोड़ते हैं। देखो। बेचारे दोबारा मेहनत कर रहे हैं। सिर्फ तुम्हारी वजह से। शुक्र है कि वे हमारा घर छोड़कर कहीं और नहीं गये।'' यह सुनकर बिलाल चुप रहा। फिर मन ही मन में सोचने लगा-''मैं चिक्कू-चिक्की को किसी भी सूरत में यहाँ नहीं रहने दूँगा। मैं इनका घोंसला बनने ही नहीं दूँगा।'' चिक्कू-चिक्की थके नहीं। रुके भी नहीं। दो दिन की मशक्कत के बाद घोंसला तैयार कर लिया। रवि बिलाल का दोस्त था। उसके पास गुलेल थी। बिलाल उससे गुलेल माँग कर ले आया। उसने गुलेल स्टोररूम में छिपा दी। चिक्कू-चिक्की दिन भर चहचहाते। फुर्र से उड़ते हुए बाहर निकलते। बैठक के दो-तीन चक्कर लगाते। फिर एक-एक कर घोंसले के अंदर घुस जाते।

एक दिन रेहाना ने बिलाल को बताया - ''लगता है चिक्की ने अंडे दे दिये हैं। देखो। चिक्कू चोंच में कीड़े-मकोड़े पकड़ कर ला रहा है। कीट-पतंगे और केंचुए इनका प्रिय भोजन है। पंद्रह-बीस दिनों की बात है। अंडों से बच्चे निकलेंगे। बच्चे चीं-चीं करने लगेंगे।'' बिलाल सोचने लगा - ''मेरा निशाना पक्का है। बस! एक बार गुलेल चलाने का मौका मिल जाए। मैं घोंसला अंडों समेत नीचे गिरा दूँगा।'' रेहाना ने ठीक कहा था। एक दिन घोंसले से चीं-चीं की आवाजें आने लगीं। बिलाल दौड़कर आया। घोंसले से आ रही आवाजों को सुनने लगा।

तभी रेहाना आई। खुश होते हुए बताने लगीं, ''अब कुछ ही दिनों में बच्चे घोंसले से बाहर निकल आएँगे।'' रेहाना ने बिलाल से कहा। बिलाल मन ही मन बुदबुदाया - ''कुछ भी हो। आज रात को मैं घोंसला तोड़ कर ही दम लूँगा।'' रात हुई। बिलाल चुपचाप उठा। स्टोररूम से गुलेल निकाल कर वह घोंसले के नजदीक जा पहुँचा। वह अभी निशाना साध ही रहा था कि चिक्कू-चिक्की चींचीं करते हुए बिलाल पर झपट पड़े। बिलाल के हाथ से गुलेल छिटक कर सोफे के पीछे जा गिरी। बिलाल उछलकर सोफे पर जा चढ़ा।

''बिलाल, बच कर रहना। देखो! सोफे के सामने कितना बड़ा बिच्छू है! यह कहाँ से आ गया!'' गुलमोहर खटका सुनकर बैठक वाले कमरे में आ चुकी थी। दूसरे ही क्षण चिक्कू-चिक्की ने बिच्छू को चोंच मार-मार कर जख्मी कर दिया। चिक्कू बिच्छू को चोंच में उठा कर घोंसले में ले गया। बिलाल डर के मारे काँप रहा था।

तभी रेहाना आ गई। गुलमोहर ने सारा किस्सा सुनाया। रेहाना बोलीं, ''बिलाल। तुम बाल-बाल बच गए। वह बिच्छू तो खतरनाक था। अब तक चिक्कू-चिक्की के बच्चे बिच्छू को अपना भोजन बना चुके होंगे। यदि बिच्छू कहीं छिप जाता तो बड़ी मुश्किल हो जाती।'' बिलाल ने राहत की साँस ली।

इस तरह कुछ दिन गुजर गए। बिलाल स्कूल आते-जाते घोंसले पर नज़र जरूर

डालता। अब वह बैठक वाले कमरे में ही पढ़ाई करता। एक शाम रेहाना ने कहा –''बिलाल। मैं बाजार जा रही हूँ।'' बिलाल को इसी पल का इंतजार था। वह दौड़कर गुलेल ले आया। घोंसला निशाने पर था। इस बार उसका निशाना चूका नहीं। घोंसला भर-भराकर नीचे आ गिरा। ढेर में मिट्टी, पंख, घास-फूस के अलावा कुछ नहीं था। उसने झाड़ू उठाया। ढेर को एक कोने

में इकट्ठा कर दिया। बिलाल ने अपने आप से कहा, ''वाह! ये गुलेल तो कमाल की चीज है। अब यह गुलेल मैं वापिस नहीं करूँगा। चाहे कुछ भी हो जाए।'' बिलाल ने तुरंत गुलेल स्टोररूम में छिपा दी। रेहाना सामान लेकर देर शाम घर लौटी। वह सीधे रसोई में खाना बनाने चली गई। खाना खाकर सब सो गए।

सुबह हुई। रेहाना ने उठकर बैठक की सफाई की। बिलाल उठा तो वह डरता हुआ बैठक के कमरे में जा पहुँचा। रेहाना ने कहा –''बिलाल बेटा। चिक्कू-चिक्की का घोंसला न जाने कैसे टूट गया।'' बिलाल ने कहा –'' मम्मी लगता है कि वे अपने बच्चों समेत वापिस लौट गए।'' रेहाना उदास हो गई। बिलाल से बोली –''हाँ। लेकिन मुझे इस बात का दुख है कि तुम चिक्कू-चिक्की के बच्चों को देख नहीं पाए। तुम्हारे स्कूल जाने के बाद और तुम्हारे स्कूल आने से पहले वे सब बैठक में यहाँ-वहाँ खूब उड़ते थे। कई बार रसोई में भी आ जाते थे। लेकिन, जब तुम घर में होते थे, बच्चे घोंसले में ही रहते थे। पता नहीं क्यों ? लगता है वे तुमसे डरते थे। लेकिन क्यों ?''

यह सुनकर बिलाल को हैरानी हुई। कुछ ही देर में उसे महसूस होने लगा कि घर सूना-सूना सा लग रहा है। वह मुस्कराया और मन ही मन कहने लगा–''सॉरी चिक्कू-चिक्की। अगली बार फिर आना और हमारे घर ही आना। मैं इंतजार करुँगा।'' बिलाल चुपचाप स्टोररूम में गया। गुलेल एक कोने में पड़ी थी। बिलाल सोच रहा था–''ये सब इस गुलेल की वजह से हुआ है। इसे रवि को लौटा देता हूँ।'' बिलाल ने गुलेल उठाई। ये चिड़िया अगली बार आएँगी या नहीं ? बिलाल यही सोच रहा था।

■■■

इमली

शिवचरण चौहान

इमली का नाम लेते ही मुँह में पानी आने लगता है। इमली के टेढ़े-मेढ़े फल व छोटी-छोटी पत्तियाँ, इतनी खट्टी होती हैं कि तेज दाँत भी खट्टे पड़ जाते हैं। इमली का वृक्ष वैसे तो भारत भर में पाया जाता है किन्तु मध्य व दक्षिण भारत में इमली के वन के वन पाए जाते है। यद्यपि वन-विनाश के चलते इमली के वनों में बेतहाशा कमी आई है, किन्तु सड़कों के किनारे इमली के वृक्षों के रोपण से इमली वृक्षों की संख्या में वृद्धि हुई है। कई विदेशी कम्पनियाँ इमली के फलों व पत्तियों से दवाओं का विकास कर रही हैं और ये इमली के पेटेन्ट कराने के चक्कर में हैं।

इमली को संस्कृत में अम्लिका, उडिया में तेंतुली, कन्नड़ में चितचिंच, हुनसेमरा, तमिल में पुलि, तेलुगू में आम्लिका, बंगला तथा गुजराती भाषा में आंवली तथा मलयालम भाषी इसे आमलम तथा वालमपुली नाम से पुकारते हैं।

इमली का पेड़, बरगद तथा पीपल के तुलना में थोड़ा छोटा होता है। यह आम के पेड़ के एक विशाल वृक्ष के बराबर होता है। इमली सदाबहार वृक्ष है और जनवरी-फरवरी में इसमें कोपलें व फूल आते हैं। नन्हीं-नन्हीं हरी कोपलें बच्चों को खाने में बहुत प्रिय होती हैं। मार्च-अप्रैल में इमली में टेढ़े-मेढ़े हँसिए की बाली से अर्द्ध चन्द्राकार फल लटकने लगते हैं, जो मई-जून तक पक जाते हैं। कच्चे फल हरे रंग के होते हैं। ये इतने खट्टे होते है कि इन्हें गिलहरियाँ, पक्षी, तथा बच्चे ही खा सकते है। बड़े-बूढ़ों के दाँत खट्टे हो जाते हैं। पके फल बाजार में बिकते हैं। इमली से खटाई बनाई जाती है। ये विटामिन-सी का भण्डार है।

इमली की झाड़ीनुमा टहनी पर दस से बीस छोटे-छोटे जोड़ पत्तक होते हैं। कोपलें हल्के हरे रंग की होती है- जबकि फूल पीले रंग के होते हैं। छोटे-छोटे फूल एक दिन बाद झर जाते हैं और वृक्ष के नीचे फूलों की चादर बिछ जाती है। फलियाँ 8 से 20 सेन्टीमीटर तक लम्बी, गूदेदार मटमैले हरे रंग की हँसियां के आकार की मुड़ी होती हैं। प्रत्येक फली में एक से लेकर पांच तक बीज पाए जाते हैं। बीज कत्थई रंग के कठोर होते हैं और फली में गूदे के साथ चिपके रहते हैं।

इमली के फल, बीज, छाल, लकड़ी तथा राख तक में औषधीय गुण पाए जाते हैं। आयुर्वेद में इमिली कई दवाइयों के काम आती है। सूखी लकड़ी को जलाकर बनी राख, शरीर में खुजली रोग में प्रयोग की जाती है। पूरे शरीर में जब लाल-लाल चकत्ते उभर आते हैं और शरीर में खुजली व जलन होती है, तो इमली की राख मलने पर तुरन्त आराम मिलता है। इमली के फलों में हल्का रेचक गुण होता है। इमली का शर्बत बनाया जाता है, जो बुखार में फायदेमन्द साबित होता है। इमली के फलों का काढ़ा बनाकर गरम गरम पीने से बहुमूत्र रोगों में फायदा मिलता है। बार-बार पेशाब जाने की समस्या से छुटकारा मिल जाता है।

इमली की हरी पत्तियों का काढ़ा खांसी व कफ को शांत करता है।

इमली की लकड़ी बहुत मजबूत होती है। इसलिए सदियों से हमारे पुरखे इसके काठ से कृषि में प्रयोग आने वाले यन्त्र, फर्नीचर, घरेलू सामान, घर के दरवाजे, खिड़कियाँ, छत आदि बनाते थे।

इसके अलावा इमली की लकड़ी में घुन (कीड़ा) नहीं लगता है तथा इसकी लकडी पानी में गलती-सड़ती नहीं है। इमली की लकड़ी की आँच बहुत तेज होती है। आम, बरगद, पीपल शीशम, बबूल, ढांक की लकड़ी की आग से इसकी आँच दो-गुनी तेज होती है। इमली की लकड़ी के कोयले का पाउडर-गन पाउडर बनाने के काम आता है। पत्तों व फूलों से पीला रंग निकाला जाता है जो औषधि के रूप में प्रयोग किया जाता है। इमली के फल का गूदा, पीतल, ताँबें व चाँदी के बर्तनों को साफ करने के काम आता है। इमली के बीज जैम व जेली उद्योग में काम आते हैं। पिसे हुए बीज लकड़ी जोड़ने के मसाले बनाने के काम आते हैं।

इमली के फल कपड़ा मिलों में उपयोग में लाए जाने वाले स्टार्च बनाने के काम आते हैं।

हमारे प्राचीन ग्रन्थों में इमली के वृक्ष का उल्लेख मिलता है। कहते हैं - इमली की पत्तियों में देवताओं का वास होता है।

इमली के बारे में कई लोककथाएँ हमारे संस्कृत और हिंदी साहित्य व भाषाओं में मिलती हैं।

खूब खट्टे-मीठे होने के कारण गाँव व शहर के बच्चों को इमली की फलियाँ खूब भाती हैं। विद्यालयों, स्कूलों और कालेजों के बाद खट्टी मीठी इमली खूब बिकती है। अब तो कुछ घरेलू कंपनियाँ इमली के पैकेट भी बेचती हैं।

■■■

खेल हवा का

घमंडीलाल अग्रवाल

बोल रहा कब से इकतारा–
खेल हवा का जग में सारा!
हवा उपस्थित गुब्बारों में,
रिक्शा, ट्रक, मोटरकारों में।
हवा घुमाती है पंखों को,
हवा बजाती है शंखों को।
ताकतवर है हवा बहुत ही–
बिना हवा के नहीं गुजारा!
कभी हवा वर्षा ले आती,
कभी हवा आँधी को लाती।
हवा पेड़-पौधों का भोजन,
हवा सभी जीवों का जीवन।
हवा सजाया करती सपने–
हवा हमारा नहीं सहारा!
पड़ती हवा नहीं दिखलाई,
होती हवा मगर सुखदाई।
कुछ गैसों का यह मिश्रण है,
ऊर्जा का बनती कारण है।
हवा बंद होते ही गूँजे–
जोरदार हरदम हरकारा!
'हवा' खराब हो गयी जिसकी,
पाँव तले की धरती खिसकी।
नेक कार्यों में जुट जाओ,
जग में अपनी हवा बनाओ।
नींव डालकर निर्माणों की–
हर लो जीवन का अँधियारा!

■■■

पेड़ लगाएँ हम

मु. जलालुद्दीन खान

अपना कल चमकाएँ हम,
धरती स्वच्छ बनाएँ हम।
प्रदूषण के राक्षस को,
धरा से मार भगाएँ हम।
इधर-उधर न डालें कूड़ा
सही जगह पहुँचाएँ हम।
साफ सफाई घर में रखें,
गली को भी चमकाएँ हम।
शोर भी होता है प्रदूषण,
शोर नहीं फैलाएँ हम।
पॉलीथिन है जहर भरा,
उसको न अपनाएँ हम।
पर्यावरण की दोस्त साइकिल,
साइकिल चलो चलाएँ हम।
जल से अपना जीवन है,
व्यर्थ न जल फैलाएँ हम।
धूल धुआँ से बचना होगा,
हवा को शुद्ध बनाएँ हम।
साफ चाहिए अगर हवा,
मिलकर पेड़ लगाएँ हम।

■■■

कुकडू कूँ

रुपाली सक्सेना

कुकडू कूँ भई कुकडू कूँ
आओ नाचे मैं और तू
हुल कबड्डी हू तू तू तू
साँस रोक कर भागे जू
कुकडू कूँ भई कुकडू कूँ
आओ खेले मैं और तू
छुपन छुपाई हूला हू
मैं छुप जाऊँ ढूँढे तू
कुकडू कूँ भई कुकडू कूँ
चिड़िया बोले चूँ चूँ चूँ
अमिया तोड़ के बैठा तू
मैं भागूँ पकड़ाए तू
कुकडू कूँ भई कुकडू कूँ
नंगे पैर यूँ भागे क्यूँ
पहले पहन के आओ शू
फिर खेलें हम हू तू तू
कुकडू कूँ भई कुकडू कूँ
आओ नाचें मैं और तू।

■■■

कविता

ये गर्मी के मीठे फल

सतीश उपाध्याय

फल हैं ये कमाल के
सेहत रखें संभाल के।
गोल गोल प्यारा तरबूज
इसमें पानी रहता खूब।
लू से हमें बचाता है
गर्मी में ही आता है।
मिनरल्स और विटामिन भी
ये सबको दे जाता है।
खरबूजा ठंडक पहुँचाता
और विटामिन-ए भी लाता।
पाचक भी होता भरपूर
लाता ये चेहरे में नूर।
झटपट ऊर्जा देना काम
ये फलों का राजा, आम।
पना चटपटा, चटनी भी
इसमें भरे विटामिन सी
काले और निराले जामुन
खूब भरे हैं इसमें गुन।
इसमें आयरन पाया जाता
तन को जो मज़बूत बनाता।
देते सबको ताकत, बल
ये गर्मी के मीठे फल।

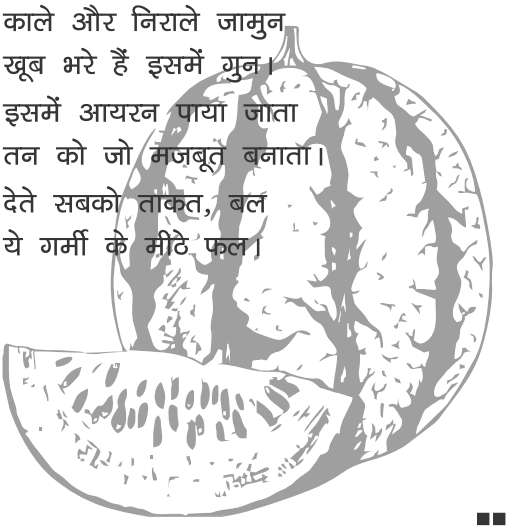

■■■

गौरैया

उदय मेघवाल 'उदय'

एक दिवस आँगन में आकर,
बोली मुझसे यूँ गोरैया।
कई दिनों से प्यासी हूँ मैं,
पानी मुझे पिला दो भैया।
गर्मी ने अब पाँव पसारे।
सूखा हलक प्यास के मारे।
पानी दिखता नहीं कहीं पर,
जाकर आई नदी किनारे।
कैसे अपनी प्यास बुझाऊँ,
सूखे सारे ताल-तलैया।
पानी मुझे पिला दो भैया।
मिले नहीं तरुवर की छाया।
जंगल का हो गया सफाया।
बच न पाया मेरा बसेरा,
तिनका चुन कर जिसे बनाया।
अपनी थकान कहाँ मिटाऊँ,
उजड़ गई है धरती मैया।
पानी मुझे पिला दो भैया।
चिड़िया की जब सुनी कहानी।
आँखों में भर आया पानी।
चिड़िया बैठी थी आँगन में,
मैं कुंडे में लाया पानी।
पानी पीकर उड़ी चिरैया।
खुश हो नाची ता ता थैया।

■■■

यात्रा संस्मरण

छुट्टी में केरल

कोविड–19 ने आवागमन रोक रखा है। जाड़े की छुट्टी में हमलोगों ने केरल जाने का साहस किया। पहले हम कोच्चि पहुँचे जिसकी एक अलग ही ऐतिहासिक पृष्ठभूमि हैं। कोच्चि फोर्ट और ज्यू (यहूदी) टाउन इसके जीते–जागते प्रमाण है। इद्रापल्ली का सेंट जॉर्ज फोरेन चर्च बेहद खूबसूरत है। हम सब ने सूर्यास्त के समय कोच्चि के जलाशयों में नौका यात्रा की। फिर हम मन्नार गए।

पर बीच में अथिरापल्ली के जलप्रपात को देखने के लिए रुके और मसालों के पौधों का बगीचा भी देखा। मन्नार रहस्यमय और बेहद खूबसूरत है। धुंध से घिरी पहाड़ियों के बीच सूर्योदय का दृश्य लाजवाब है। चाय बागान भी यहाँ के मनोरम दृश्य उपस्थित करते हैं। फिर हमलोग गाड़ी से शिखर–स्थल पहुँचे, बादलों के बीच मन्नार के बाद हम थेक्काडि गए। वहाँ केटीडीसी आवास में टिके जो पेरियार टाइगर रिजर्व में स्थित है। दोपहर में पेरियार नदी में नौकायन के दौरान कुछ जानवर देखे, कुछ अचंभित करने वाले अनोखे पक्षी भी। वहाँ शाम बहन के साथ मौज में बीती। थेक्काडि से हमलोग अलिप्पेड़ गए जहाँ हम वेम्बनाड झील पर हाउसबोट में रहे। यह देश की सबसे बड़ी झील है। गोधूलि के समय यह बेहद खूबसूरत लगती है। वापस त्रिवेंद्रम आते हुए हम वरकला बीच पर रुके। वहाँ टाँगें फैलाकर सुस्ताये। लेकिन समुद्री लहरों के बीच जाने की इच्छा दबा न पाए, वहाँ परिवार के साथ सचमुच बड़ा मजा आया। नये साल के स्वागत में त्रिवेंद्रम को बहुत सजाया गया।

पूवार में हम सब ने आम के पेड़ों के बाग

के किनारे–किनारे नौकायन किया। फिर उस मुहाने पर पहुँचे जहाँ झील अरब सागर से जा मिलती है। त्रिवेंद्रम में पद्मनाभा स्वामी मंदिर और कोलम बीच भी बहुत अच्छा लगा। इस यात्रा में परिवार के साथ बड़ा मजा आया। हमारे लिए कोविड के दूसरे और तीसरे वेव के बीच जाड़े की छुट्टियाँ आनंददायक रहीं। केरल को सच ही 'ईश्वर का देश' कहा गया है।

– विनायक राज,
कक्षा–10ए, डीपीएस, पटना।

तुम देश की शान हो

वो सूरज तो तुम चाँद हो
वो पानी तो तुम बाँध हो
अगर हम देश के गौरव हैं
तो तुम देश की शान हो
वो जमीन तो तुम आसमान हो
वो खंजर तो तुम तलवार हो
दुआ हम सबकी बस इतनी
कि हम सब का कल्याण हो
तुम अपनी शक्ति से अनजान हो
तुम फूल नहीं अंगार हो
अपने आप को कम मत आँकों
तुम देवी का अवतार हो।

– अरमान आर्या,
बी.बी.बी.के. नं.–1267/18–19

■■■

है बादल के कई रंग

बादल के होते कई रंग,
हमें लगता वे हैं बेरंग।
ये बादल हैं गरजते कभी,
गरजने के बाद बरसते तभी।
गर्मियों में सफेद देखते,
बरसात में काले हो जाते।
घूमते बादल जग सारा,
फिर आते यहीं दोबारा।
ये आसमाँ में हैं रहते,
इंद्रधनुष को रंग से भरते।
होते हैं बादल के कई रंग,
ना होते हैं वे बेरंग।

– आदित्य राज, कक्षा–आठवीं,
रजा हाई स्कूल।

■■■

बारिश की बूँदें

बूँदों से बूँदों मिलकर
बारिश खूब कराती हैं।
धीरे-धीरे ये बूँदें अब
सबके घर में जाती हैं।
तुम बारिश की बूँदें हो तो
क्यों बारिश नहीं कराती हो?
ऐ बारिश की बूँदो तुम सब
गुल नया खिलाती हो।
इस बंजर प्यासी धरती की
प्यास तुम बुझाती हो।
धीरे-धीरे बरस-बरस कर
एक बड़े रूप में आती हो।
इतना कुछ करने के बाद भी
एहसान नहीं गिनाती हो।
ऐ बारिश की बूँदो तुम सब
जब मेरे छत पर आती हो।

– **निमिषा कुणाल,** कक्षा-दसवीं,
दुन्स पब्लिक स्कूल।

देख मदारी वाला आया

देख मदारी वाला आया,
खेल दिखाने भारी आया।
बच्चों को बहलाने आया,
थोड़ा बहुत कमाने आया।
रोजी-रोटी बनाने आया,
रामपुर नामक गाँव में आया।
डमरू की डम्-डम् पर
बंदर ने खूब नाच दिखाया।
सबको आया, खेल पसंद,
मदारी के पास दो पैसा आया।

– **प्रगति प्रांजल,** कक्षा-10वीं, संत पॉल
एकेडमी, गुलजारबाग, पटना-7

चूहा है या घास

एक दिन की बात है, नंदनवन में सुबह-सुबह शेरू कुत्ता घूमने जा रहा था। उसकी नजर सामने उछल रही बिल्ली पर पड़ी। उसके हाथ में मोटा-ताजा चूहा था। शेरू को चूहा खाना बहुत पसंद था। वह उस चूहे को खाना चाहता था। उसने सोचा, यदि मैं बिल्ली से यह चूहा माँगूँगा, तो यह नहीं देगी। इसके लिए हमें कुछ करना होगा। तभी उसे एक तरकीब सूझी। वह उस बिल्ली के पास गया और बोला- ''बिल्ली, यह क्या है ? तुम घास कब से खाने लगी, तुम्हारा पेट खराब हो जाएगा।'' बिल्ली बोली-''यह चूहा, है घास नहीं!'' ''तुम्हारी आँख तो खराब नहीं हो गई, किसी से भी पूछ लो यह घास है'', कुत्ता बोला। बिल्ली बिना चूहा खाए उसे लेकर आगे चली गई। कुत्ता उसके नजरों से छिपकर कीचड़ में नहा लिया, और बिल्ली के सामने आ गया। बिल्ली को लगा यह कल्लू कुत्ता है। बिल्ली के कुछ कहने से पहले ही शेरू बोल पड़ा। ''अरे बिल्ली, तुम घास कब से खाने लगी ? तुम्हारा पेट खराब नहीं होगा ?''

बेचारी बिल्ली दौड़ कर आँख के डॉक्टर के पास पहुँची, इधर शेरू कुत्ता मजे से चूहा खाने लगा।

- राज आर्यन, कक्षा-ग्यारहवीं।

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर

हरीश चंद्र पांडे

हम भारतीयों के दिल में जब भी राष्ट्र गान 'जन गण मन' गूँजता है तो इसको रचने वाले गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर भी जागृत हो जाते हैं। एक युगदृष्टा कवि, कहानीकार, शिक्षाविद और भारतमाता के सच्चे सपूत गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर हमेशा अमर हैं। रवीन्द्रनाथ टैगोर का जन्म 7 मई, 1861 को कलकत्ता (वर्तमान कोलकाता) में देवेंद्रनाथ टैगोर के घर एक संपन्न बंगाली परिवार में हुआ था। उनकी माँ का नाम शारदा देवी था।

रवीन्द्रनाथ टैगोर की प्राथमिक शिक्षा प्रतिष्ठित सेंट ज़ेवियर्स स्कूल में हुई। बैरिस्टर बनने की चाहत में टैगोर ने 1878 में इंग्लैंड के ब्रिजटोन पब्लिक स्कूल में नाम लिखवाया।

वह उन कम लोगों में से थे जिन्होंने लंदन के कॉलेज विश्वविद्यालय में क़ानून का अध्ययन किया, लेकिन 1880 में बिना डिग्री हासिल किए ही वापस आ गए। रवीन्द्रनाथ टैगोर को आठ साल की उम्र से ही कविताएँ और कहानियाँ लिखने का शौक था। उनके पिता देवेन्द्रनाथ ठाकुर एक जाने-माने समाज सुधारक थे। वे चाहते थे कि रवीन्द्रनाथ बड़े होकर बैरिस्टर बनें। इसलिए उन्होंने रवीन्द्रनाथ टैगोर को कानून की पढ़ाई के लिए लंदन भेजा। लेकिन रवीन्द्रनाथ का मन वहाँ कहाँ से लगता, उनका मन तो साहित्य में ही रमता था। उन्हें अपने मन के भावों को काग़ज़ पर उतारना बहुत ही ज्यादा पसंद था। आख़िरकार, उनके पिता ने पढ़ाई के बीच में ही उन्हें वापस भारत बुला लिया और उन पर घर-परिवार की ज़िम्मेदारियाँ डाल दीं। रवीन्द्रनाथ टैगोर को प्रकृति के विभिन्न स्वरूपों से बहुत ज्यादा प्यार था। साहित्य से उनको इतना प्यार था कि देश-विदेश में उन्हें गुरुदेव के नाम से संबोधित किया जाने लगा। साहित्य की विभिन्न विधाओं में उन्हें महारत हासिल थी।

उनकी इसी खूबी की बदौलत उन्हें विश्व के मंच पर भी सम्मान दिया गया। गुरुदेव की सबसे लोकप्रिय रचना 'गीतांजलि' है जिसके लिए 1913 में उन्हें नोबेल पुरस्कार प्रदान किया गया। वे विश्व के एकमात्र ऐसे साहित्यकार थे जिनकी दो रचनाएँ दो देशों का राष्ट्रगान बनीं – भारत का राष्ट्र-गान 'जन गण मन' और बांग्लादेश का राष्ट्रीय गान 'आमार सोनार बांग्ला' गुरुदेव की ही रचनाएँ हैं। उनकी लोकप्रिय रचना 'गीतांजलि' लोगों को इतनी पसंद आई कि जर्मन, फ्रेंच, जापानी, रूसी आदि विश्व की सभी प्रमुख भाषाओं में इसका अनुवाद किया गया जिससे टैगोर का नाम दुनिया के कोने-कोने में फैल गया। रवीन्द्रनाथ ने अपनी कहानियों में साधारण जीवन को सुंदर ढंग से व्यक्त किया है। उनकी कहानियों में 'क़ाबुलीवाला', 'मास्टर साहब' और 'पोस्टमास्टर' आज भी लोकप्रिय कहानियाँ हैं और लगातार चर्चा का विषय बनी रही हैं। रवीन्द्रनाथ की रचनाओं में स्वतंत्रता आंदोलन और उस समय के समाज की झलक साफ तौर पर देखी जा सकती है। उन्होंने विश्व के सबसे बड़े नरसंहार में से एक 1919 में हुए जलियाँवाला कांड की घोर निंदा की और इसके विरोध में उन्होंने ब्रिटिश प्रशासन द्वारा दी गई 'सर' की उपाधि वापस कर करीब 2,230 गीतों की रचना की। रवींद्र संगीत बाँग्ला संस्कृति का अभिन्न अंग है। टैगोर के संगीत को उनके साहित्य से अलग नहीं किया जा सकता। उनकी अधिकतर रचनाएँ तो अब उनके गीतों में शामिल हो चुकी हैं। हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की ठुमरी शैली से प्रभावित ये गीत मानवीय भावनाओं के अलग-अलग रंग प्रस्तुत करते हैं।

सन् 1863 के आसपास उनके पिता देवेंद्रनाथ ठाकुर ने कोलकाता से 180 किलोमीटर दूर बोलपुर में एक आश्रम की स्थापना की। इस स्थान की लाल माटी तथा छतिम वृक्षों (सप्तपर्णी) से परिपूर्ण दृश्यों को देखते ही देवेंद्रनाथ मंत्रमुग्ध हो गए। उन्होंने स्वयं के लिए यहीं एक भवन का निर्माण कराने का निश्चय किया। उन्होंने अपने उस भवन का नाम शांतिनिकेतन रखा। उस समय उन्होंने कल्पना भी नहीं की थी कि एक दिन यही नाम उनके सुपुत्र के अथक प्रयासों से संस्कृति के प्रतीक के रूप में विश्व प्रसिद्ध हो जाएगा। शांतिनिकेतन का शब्दशः अर्थ है, शांति का आवास। आश्रम ध्यान-उपासना के लिए तथा आध्यात्मिक ज्ञान की खोज में आए प्रत्येक साधक के लिए खुला था। इस स्थान ने बंगाल के ब्रह्म समाज आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने यहाँ बहुत काम किया और सन् 1901 में शांतिनिकेतन में एक प्रायोगिक विद्यालय की स्थापना की थी। यहाँ उन्होंने भारत और पश्चिमी परंपराओं और संस्कृति को मिलाने का प्रयास किया, वह विद्यालय में ही स्थायी रूप से रहने लगे और 1921 में यह विश्व भारती विश्वविद्यालय नाम से जाना जाने लगा।

शांति निकेतन में गुरुदेव खुद भी बहुत अनुशासित रहते थे। गांधीजी उनसे मिलने आजादी की लड़ाई के दौरान शांतिनिकेतन आते जाते रहते थे। गांधीजी उनके सरल और सहज व्यक्तित्व और प्रकृति प्रेम से बहुत प्रभावित थे। गुरुदेव अनाज को भी भगवान मानते थे और अन्न बरबाद नहीं करते थे।

एक बार वो कुछ सप्ताह के लिए अस्वस्थ रहे और परोसा हुआ भोजन पूरा नहीं खा पा रहे थे। तब वो बाहर जाकर बचा हुआ अन्न ऐसी जगह फैला देते कि उसकी महक से तोते और कौए आकर वह अन्न चुग जाते। जबकि बाकी

लोग बचा अन्न एक पात्र में डाल देते थे। अब सबने गौर किया कि जिस जगह गुरुदेव अन्न बिखेर देते थे, वहाँ पर तरह-तरह की चिड़िया आ जाती हैं। इस तरह माहौल इतना सुंदर हो जाता था कि चहचहाहट से सबका मन हर्षित हो जाता। अब कुछ दिनों बाद यह परिवर्तन आया कि किसी की थाली पर दो दाने भी बच गये, वो उसको चिड़ियों के लिए बिखेर देते। गुरुदेव के स्वभाव से कुछ ऐसी प्रेरणा हमको भी लेनी चाहिए। उनके शांतिनिकेतन में हर गतिविधि उनके ही विचारों की संपूर्ण अभिव्यक्ति है।

शांतिनिकेतन संकुल के भीतर भ्रमण करना सौ वर्ष पूर्व के भारत में भ्रमण करने जैसा है। ऐसा प्रतीत होता है मानो रवीन्द्रनाथ टैगोर अभी किसी एक घर से निकलकर बाहर आ जाएँगे। ऐसा लगता है जैसे वे अभी किसी विद्यालय से बाहर आकर आपसे चर्चा करेंगे। वे प्रत्यक्ष रूप से तो नहीं आते, किन्तु शांतिनिकेतन के कोने कोने में उनके द्वारा रचित प्रत्येक स्थल के द्वारा वे आपसे अपरोक्ष रूप में वार्तालाप करते प्रतीत होते हैं।

शांतिनिकेतन में एक शिल्पग्राम भी है जो भारत की जनजातियों की धरोहरों का उत्सव मनाता है। यहाँ भारत की अधिकांश जनजातियों द्वारा रचित भित्तिचित्र तथा अन्य अनेक प्रकार की कलाकृतियाँ प्रदर्शित की गई हैं।

■■■

क्रोध पर विजय

संजीव कुमार आलोक

रामपुर गाँव में एक गरीब किसान रहता था। वह बड़ा ही क्रोधी स्वभाव का था। आम तौर पर गरीब आदमी क्रोधी नहीं होते किन्तु यह किसान क्रोधी था। वह क्रोध में इतना पागल हो जाता था कि कभी अपनी पत्नी को पीट देता, तो कभी पूरे घर में तोड़-फोड़ मचा देता। गाँव में कोई भी उससे बात नहीं करता था।

एक बार उस गाँव में एक महात्मा पधारे। सारा गाँव उनके दर्शनों को उमड़ पड़ा। उस किसान को पता चला। उसने सुना था कि महात्मा जी के आशीर्वाद से हर मनोकामना की पूर्ति होती है। वह धनी बनना चाहता था। धनी बनने की कामना के साथ वह महात्मा जी के पास गया। बहुत देर बैठे रहने के बाद उसे महात्मा जी के दर्शन का सौभाग्य मिला। उसने अपशब्द कहते हुए महात्मा जी से धनी होने का आशीर्वाद माँगा। महात्मा ने उसे कुछ देते हुए कहा- "ये लो! यह एक ऐसा बीज है जिसे बोकर तुम धनी बन सकते हो, लेकिन याद रखना अधिक क्रोध करने से यह फल नहीं देगा।"

किसान ने बीज जाकर बो दिया। किन्तु उसका क्रोध कम नहीं हुआ। जब बीज से अंकुर भी न फूटा तो किसान क्रोध में भरा महात्मा जी के पास गया और अपशब्द बोलने लगा। महात्मा जी धैर्यपूर्वक उसकी बात सुनते रहे और उसे फिर वही बीज देते हुए कहा कि अधिक क्रोध करने से यह बीज नहीं फलेगा।

इस प्रकार तीन-चार बार किसान महात्मा जी के पास गया और महात्मा जी ने हर बार वही बातें कहते हुए उसे बीज दे दिया। धीरे-धीरे

किसान को महात्मा जी की बातों में सार नजर आने लगा। उसका क्रोध कम होने लगा।

एक दिन वह फिर महात्मा जी के पास गया और बड़े प्यार व श्रद्धा के साथ बोला– "बाबा, मैं अंधा था जो आपकी बात नहीं समझा। अब मैंने क्रोध का त्याग कर दिया है, किन्तु फिर भी मुझे कोई लाभ नहीं हो रहा जबकि अन्य लोग आपके आशीर्वाद से फल–फूल रहे हैं। आप सिर्फ मेरी शंका का समाधान कर दीजिए, मुझे अब धन की भी कामना नहीं है।"

यह सुनकर महात्मा जी ने कहा, "वत्स, तुमने क्रोध पर विजय पाई, यह बहुत अच्छी बात है। आदमी को सहनशील होना चाहिए। वह सहन नहीं करता इसलिए लड़ाई–झगड़ा होता है। घर में अशांति आती है। अब रही दूसरी बात कि मेरे आशीर्वाद से लोग फल–फूल रहे हैं तो यह गलत है। सभी को अपनी मेहनत का फल मिल रहा है। मैं तो केवल उन्हें श्रम की सलाह देता हूँ। यह कोई चमत्कार नहीं है। मैं भी तुम्हारी तरह साधारण आदमी हूँ। मैं तुम्हें पत्थर देता था, इसलिए उसमें अंकुर ही नहीं फूटता था। अब तुम आमों की ये गुठलियाँ ले जाओ और उन्हें बो दो। पर याद रखना क्रोध का त्याग व श्रम की पूजा ही तुम्हें फल देगी।"

किसान महात्मा जी के उपदेश को अपने हृदय में उतार घर आ गया। उसने गुठलियाँ बो दीं। धीरे–धीरे उसके पास आमों का बगीचा तैयार हो गया। अपने प्रेमपूर्ण व्यवहार और मेहनत के बल पर वह शीघ्र ही धनवान इंसान बन गया।

■■■

कहानी

ऐसे सुधरा चिंटू

रीता कौशल

चिंटू की बुआ अमेरिका में रहती थीं और उसके एक मामा इंग्लैंड में रहते थे। इसके अतिरिक्त उसके कुछ अन्य रिश्तेदार भी दूसरे देशों में रहते थे। चिंटू को इन सबसे चीजें माँगने की आदत थी। वह विदेश से आयी इन वस्तुओं को अपने मित्रों को दिखा कर अपनी शान बघारता।

वैसे तो ये सभी रिश्तेदार जब इंडिया आते तो चिंटू के लिये कुछ-न-कुछ उपहार लाते लेकिन चिंटू इन उपहारों से संतुष्ट न होता। वह ऐसी वस्तुएँ उपहार में चाहता था जिन पर या तो जिन देशों से वो ख़रीदी गयी हैं, वहाँ के राष्ट्रीय चिह्न बने हों, या फिर किसी-न-किसी रूप में उन देशों के नाम लिखे हों।

जब भी बुआ, मामा या अन्य रिश्तेदार विदेश से इंडिया आने वाले होते तो चिंटू अपनी मम्मी का मोबाइल लेकर उन्हें फ़ोन करता। फोन पर वह उन्हें याद दिलाता कि वे वहाँ से उसके लिये कोई ऐसी चीज़ लाएँ जिसे दूर से देखने पर ही सबको पता चल जाए कि वह चीज़ किस देश से आई है।

शुरू में तो सबने इस बात को चिंटू का बचपना समझ कर ध्यान नहीं दिया, लेकिन धीरे-धीरे सबने महसूस किया कि चिंटू को माँगने और बेकार का दिखावा करने की गंदी आदत पड़ती जा रही है।

चिंटू की मम्मी उसकी इन आदतों से बहुत परेशान थीं। वह उसे सुधारने की तरकीब सोच रही थीं। मम्मी ने जल्दी ही एक तरकीब ढूँढ निकाली। उन्होंने झट से चिंटू की बुआ को अमेरिका फ़ोन किया और फिर इंग्लैंड उसके मामा से भी बात की। मम्मी ने बुआ और मामा को अपनी योजना बतायी। उन दोनों ने चिंटू की मम्मी की योजना का समर्थन किया।

इस बार फिर बुआ के इंडिया आने के एक हफ्ता पहले चिंटू ने उन्हें फ़ोन पर याद दिलाया

कि वह उसके लिये अमेरिका की कोई निशानी लाना न भूलें। बुआ ने चिंटू की माँग सुनकर 'हाँ' कर दी। जब एक हफ्ते बाद बुआ इंडिया आईं तो उसके लिये अमेरिका के झंडे के रंगों व डिजाइन वाला एक पेंसिल केस ले आईं। चिंटू खुश हो गया।

चिंटू के पास उसके चाचा के बच्चे भी बैठे थे। बुआ उनके लिये भी उपहार लायी थीं। जैसे ही बुआ ने अपने ब्रीफ़केस से निकाल कर चाचा के बच्चों के हाथ में उपहार पकड़ाये, चिंटू का चेहरा लटक गया।

"क्या हो गया चिंटू ? तुम अचानक उदास कैसे हो गये ?" मम्मी ने पूछा।

"मम्मी देखिये ना! बुआ मेरे लिये तो सिर्फ़ एक पेंसिल केस ही लायी हैं और घर के दूसरे बच्चों के लिये कितने अच्छे ब्रांड की, सुंदर-सुंदर टी-शर्टस लायी हैं।"

"तो क्या हुआ ? तुमने जो माँगा वो तुम्हें मिल गया। फिर क्या उदास होना! तुम अपनी चीजों से मतलब रखो...देखो इस पेंसिल केस को दूर से ही देख कर तुम्हारे दोस्त समझ जाएँगे कि ये अमेरिका से आया है। यही तो चाहते हो तुम।" मम्मी और बुआ दोनों एक दूसरे की तरफ़ देख मुस्कुरा रही थीं। जैसे कह रही हों, "देखा अपनी योजना काम कर रही है।"

चिंटू इतना भी बेवकूफ़ नहीं था। वह अच्छी तरह समझता था कि एक प्लास्टिक के पेंसिल केस की तुलना में ब्रांडेड टी-शर्ट्स कितनी महँगी होती हैं। ऊपर से उनके सुंदर रंग व डिजाइन उसके मन को ललचा रहे थे। वह मन ही मन पछता रहा था कि अगर वो बुआ को अपनी शर्तों पर उपहार लाने के लिये फ़ोन न करता तो बुआ उसके लिये भी वैसी ही अच्छी - सी टीशर्ट लेकर आतीं।

अगले महीने इंग्लैंड से मामा भी इंडिया आने वाले थे लेकिन चिंटू ने इस बार मामा को विशेष तरह के उपहार की माँग के लिये कोई फ़ोन नहीं किया। वह समझ गया था कि उपहार माँग कर लेने का तरीक़ा ठीक नहीं होता।

■■■

कहानी

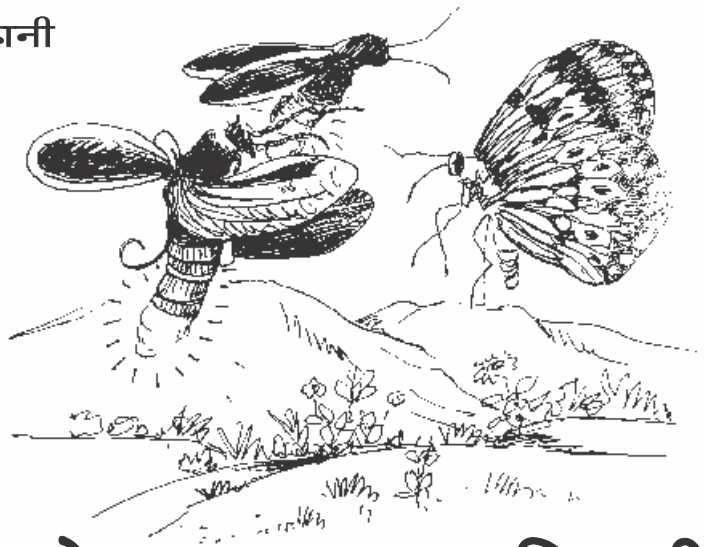

दो जुगनू एक तितली

मंजु महिमा

मंगल ग्रह पर अन्नू 'टिमटिम' और बन्नू 'झिलमिल' दो जुगनू रहते थे। वे भारत से भेजे गए एक सेटेलाइट में चिपक कर आ गए थे। पिछली बार जब वे चन्दा मामा से मिलने गए थे, तब मामा ने एक कैमरा और एक दूरबीन उन दोनों को उपहार में दिए थे।

अब वे दोनों मंगल ग्रह पर घूमते-घूमते तस्वीरें खींचने लगे थे और दूरबीन से तारों और ग्रहों की खोज भी करने लगे थे। एक दिन देखते-देखते उन्होंने एक नीले रंग का तारा देखा..। झिलमिल बोला, ''अरे! यह तो पृथ्वी दिखाई दे रही है।''

टिमटिम ने चकित होते हुए कहा, ''ओह! हाँ, कितना समय हो गया है न हमें पृथ्वी से आए हुए, क्यों न हम पृथ्वी पर वापस जाएँ?''

''हूँ, फिर तो हमें जाने की तैयारी करनी चाहिए। वैसे भी पृथ्वी के दोस्तों की याद सताने लगी है।'' झिलमिल बन्नू ने कहा।

अन्नू बोला-''वहाँ हमें परी, राम, श्रीहान और सुयश जैसे दोस्त मिलते थे, जो हर वर्ष जंगल की सैर करने आया करते थे। उनसे मिलकर कितना मजा आता था न!''

दोनों जुगनू पृथ्वी पर जाने की तैयारी करने लगे..। ज्यादा कुछ तो ले जा नहीं सकते थे, सो बस कैमरा और दूरबीन लिया और तैयार हो रात का इंतजार करने लगे।

रात हुई। कई सितारे जगमगाने लगे और नीले रंग के सितारे जैसी पृथ्वी भी दिखाई देने लगी।

1.. 2.. और 3 बोल कर दोनों ने कूद लगा दी और उड़ने लगे। बड़ा मजा आ रहा था, हवा में लहरा-लहरा कर उड़ने में। वे अपने पुराने दिनों को याद कर रहे थे कि तभी एक तेज आवाज ने उन्हें चौंकाया.. देखा कोई एक

चमकती सी गोल तश्तरी [satellite] घूमती हुई उनकी तरफ ही आ रही है। उससे बचने की कोशिश की पर वे उसके धक्के से बच नहीं पाए और दूसरी ओर मुड़ गए। उसकी तेज रोशनी से उनकी आँखें चौंधिया सी गई थीं। पर जैसे ही वह दूर गई, उन्हें ठीक से दिखाई देने लगा....

अचानक उन्हें लगा कि कोई उन्हें नीचे की ओर खींच रहा है। अन्नू बोला, ''लगता है झटके के कारण हम पृथ्वी की परिधि में आ गए है।''

''हाँ, ऐसा ही लगता है, पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति के कारण ही हम तेजी से नीचे की ओर जा रहे हैं।''

ज्यों ही वे पृथ्वी के अधिक करीब आए उन्हें बर्फ दिखाई देने लगी..। फिर पानी भी नजर आया....., वे और नजदीक आए, उन्हें एक शहर और उसमें एक स्थान पर गहरी हरियाली दिखाई दी। उन्होंने वहीं उतरना बेहतर समझा।

ज्यों-ज्यों वे पास आते गए। उन्हें घने वृक्ष, हरी दूब के मैदान और कई सुंदर फूलों के पौधे नजर आने लगे, सुबह होने ही वाली थी, सूरज दादा कोहरे को काटने में लगे थे। अन्नू बन्नू ने अपना सामान संभाला और धीमे-धीमे एकांत देख उतर गए ....

अभी उतरे ही थे कि एक प्यारी-सी तितली उड़ती हुई उधर आ निकली। उन्हें देख चकित हो गई। सोचने लगी कि ये कैसी तितलियाँ हैं जिनके पंखों पर बल्ब लगे हैं!! उसने ऐसा कभी देखा न था, वह उड़ती-उड़ती उनके पास पहुँची और बोली, ''हेलो! तुम लोग कौन हो भई? कभी देखा नहीं तुम्हें इधर?''

अन्नू-बन्नू बोले, ''हाँ, हम बस अभी-अभी ही आएँ हैं, मंगल ग्रह से।''

''क्या!! यह कौन-सी जगह का नाम है?'' चौंकते हुए तितली ने कहा।

''हम हर वर्ष सौर-मण्डल के मंगल ग्रह से पृथ्वी पर आते है, जो यहाँ से असंख्य किलोमीटर की दूरी पर है। लेकिन अभी हमें यह पता नहीं लग रहा कि यह पृथ्वी का कौन-सा देश है?''

बन्नू ने पूछा, ''क्या तुम बता सकती हो? और हाँ, तुम भी पंख वाली हो, बड़े सुंदर पंख हैं तुम्हारे, तुम्हारा नाम क्या है?''

तितली ने थोड़ा इतराकर कहा, ''ओह! तारीफ के लिए धन्यवाद। यह 'यूनाइटेड किंगडम' का 'लंदन' शहर है। मेरा नाम 'मिली' तितली है और तुम्हारे नाम?''

बन्नू ने अपने पंख फड़फड़ाते हुए कहा, ''मेरा नाम बन्नू झिलमिल जुगनू है।'' तो अन्नू ने अपनी रोशनी को टिमटिमाते हुए कहा, ''मेरा नाम अन्नू टिमटिम जुगनू है।''

''अरे! बाप रे! इतने बड़े नाम?''

''ओह! तुम चाहो तो मुझे अन्नू और इसे बन्नू कह सकती हो।''

''और तुम लोग मुझे 'मिली'।'' खुश होते हुए तितली ने कहा "क्या तुम मेरे दोस्त बनना चाहोगे?"

''अरे वाह! क्यों नहीं? हम तुम्हारे देश में आएँ हैं और यहाँ अपने जैसे पंखों वाली दोस्त को पाकर तो हम निहाल ही हो जाएँगे। तुम हमें अपना शहर दिखाओगी न!''

''क्यूँ नहीं? यह कोई पूछने वाली बात है, अब दोस्त कहा है तो दोस्ती तो निभानी पड़ेगी न!'' मिली ने हँसते हुए कहा।

सूरज दादा की तेज किरणों ने उस बर्फीले कोहरे को आखिर काट ही दिया और मुसकुराते हुए अपनी बादल की खिड़की से झाँकने लगे।

तीनों ने हँसते-हँसते अपनी उड़ान भरी। उड़ते-उड़ते बन्नू ने देखा तो चिल्लाया, ''अरे! देखो उस लेक के किनारे कुछ बच्चे खेल रहे हैं और कितनी सुंदर बत्तखें भी हैं!''

''अरे! देखो वह बतख कैसे एक पैर पर खड़ी है!'' अन्नू ने इशारे से बताया।

''इसका क्या नाम है? मिली क्या तुम्हें पता है?''

मिली बोली, ''अरे! यह बत्तख भी है और चिड़िया भी... ये यहाँ बहुत होती हैं। ये आने जाने वालों से डरती नहीं हैं ..सबके साथ इनकी दोस्ती हो जाती है। इसका नाम है– हेररिंग गल (herring gull) –

''अरे! हाँ, मिली! क्या यह 'योगा' कर रही है?'' हँसते हुए बन्नू ने पूछा।

''अच्छा मिली! क्या तुम बता सकती हो, यह शहर के बीचो बीच नदी है या फिर झील (लेक)?'' बन्नू ने उस निराली चिड़िया की फोटो लेते हुए पूछा।

''शांत शांत... मैं सब बताती हूँ...। यह 'लेक' नहीं, टेम्स नदी है, जो लंदन शहर के बीच में है। टेम्स नदी अथवा 'थेम्स नदी' यूरोप की प्रमुख नदी है। लंदन टेम्स नदी के किनारे ही बसा है। इस नदी को 'लंदन की गंगा' भी कहा जाता है।'' मिली ने बताया।

उड़ते हुए अचानक एक ऊँचा टावर नजर आया, ''अरे! बाप रे! इतना ऊँचा तो हम उड़ भी नहीं सकते.. यह क्या है?'' जैसे ही बन्नू ने पूछा 'टन्न' से जोरदार आवाज हुई.. दोनों बुरी तरह डर गए और पेड़ के पत्तों में दुबक गए...

मिली ने हँसते हुए बताया कि यह एक घड़ी है, यह हर आधे घंटे बाद घंटा बजाती है, यह इसी की आवाज थी। 'बिग बेन' नाम है इसका.. यह लंदन के 'वेस्टमिंस्टर पैलेस' के उत्तरी छोर पर स्थित है। यह दुनिया की सबसे बड़ी चार मुँह वाली घंटानाद घड़ी है और तीसरी सबसे बड़ी स्वतन्त्र रूप से स्थित क्लॉक टावर है।

''ओह! क्या यह समय बताती है?'' अन्नू–बन्नू दोनों ही दंग रह गए।

उसे चारों ओर से घूम–घूम कर देखते हुए आगे बढ़ गए, पर उसका भी फोटो लेना नहीं भूले।

तभी उन्हें एक बड़ा सा चक्र हवा में घूमता नजर आया, देख अन्नू जोर से चिल्लाया, ''बन्नू देख कितना बड़ा पहिया! कैसे घूम रहा है!'' बन्नू भी चकित हो फड़फड़ाया, उन दोनों के हाव भाव देख मिली मुस्काई और उन्हें लेकर उसी ओर बढ़ गई.. चलो पास से देखते हैं...

तीनों उसी ओर बढ़ चले, जैसे ही पास गए.. अन्नू चौंका, अरे इसमें तो लोग बैठे हैं.. बन्नू ने भी 'दाँतों तले उंगली दबा ली'।. चक्र तेजी से गोल–गोल घूम रहा था, उसमें बैठे लोग चिल्लम–चिल्ली कर रहे थे, पर वे आनंद भी भरपूर ले रहे थे...। मिली ने बताया, 'यह है 'लंदन आई'। यह 'लंदन आई' 135 मीटर पर दुनिया का सबसे लंबा अवलोकन चक्र (व्हील) है। इसमें 32 कैप्सूल हैं और इसमें 10,000 लोग रोज बैठकर लंदन का 25 किमी. तक का नजारा देख सकते हैं।

ओह! इतनी सारी मशीनों के करिश्मे देख दोनों चकित तो थे, पर उन्हें बहुत मजा नहीं आ रहा था। बन्नू ने कहा, ''मिली रानी! यह तो बताओ कि इस देश में क्या यह मशीनें ही मशीनें हैं या कोई सुंदर स्थान या पशु पक्षी भी हैं?''

अन्नू ने कहा - ''सुनो मिली! यह तो बताओ कि यहाँ के लोग कैसे हैं? मुझे तो खाने का भी कुछ नजर नहीं आ रहा.. मुझे तो यहाँ लोग भी बहुत कम नजर आ रहे हैं.. भारत में तो हर जगह लोगों की भीड़ और तरह तरह के जानवर देखने को मिल जाते थे.. यहाँ तो लोग होते हुए भी भीड़ नहीं नजर आती।'' बन्नू ने पूछा।

''हाँ, इन दिनों यहाँ आमिक्रोन नामक वायरस से बीमारी फैली हुई है, इसीलिए लोग कम नजर आ रहे हैं।''

''ओह!''– बन्नू ने कहा।

मिली तितली ने अपने पंखों को पूरा खोलते हुए कहा, ''चलो, मैं तुम्हें तुम्हारी मन पसंद जगह ही ले चलती हूँ। इन दिनों यहाँ बहुत सुंदर फूल खिला करते हैं और इन्हें वहाँ के बागवान पौधों को बहुत सुंदर रूप दिया करते हैं। दूर दूर से लोग इस पार्क में आते हैं, यह 'चेल्सी फ्लॉवर शो' कहलाता है। वहाँ हमारे कई दोस्त भी मिल जाएँगे और मनपसंद खाना भी और उड़ते–उड़ते ही मैं तुम्हारे प्रश्नों के उत्तर भी देती जाऊँगी.. बन्नू!''

यह सुनकर दोनों खुशी से उछल पड़े और कहने लगे, ''तुम कितनी अच्छी हो, कितनी मददगार.. काश! हमारे ग्रह पर भी तुम्हारे जैसी सुंदर तितलियाँ होतीं।''

''शुक्रिया, पर तुम भी तो अपने ग्रह के बारे में कुछ बताओ, वहाँ क्या क्या है ?''

''हमारे ग्रह के बारे में हम क्या बताएँ, हमें खुद को भी अधिक जानकारी नहीं है। वहाँ की धरती लाल रंग की है, वहाँ अभी खोज चल रही है... अमेरिका, रूस, भारत आदि देश अपने आबिटरो और रोवर्स द्वारा खोज करने में लगे हैं... हम भी वहाँ घूम–घूम कर पानी ढूँढ़ते रहते हैं। वहाँ की जमीन को देखकर लगता है कि वहाँ पानी रहा होगा।'' हँसते हुए अन्नू ने बताया।

बन्नू बोला, ''इसीलिए तो हम यहाँ आ जाते हैं, हमें यहाँ बहुत अच्छा लगता है.. तुमने नहीं बताया यहाँ के मौसम और लोगों के बारे में.. ?''

(शेष अगले अंक में)

■■■

भूरा

वंदना गुप्ता

रोज की तरह सुबह-सुबह शांति काम करने आई तो माँ ने उसे चाय व ब्रेड दी।

''नहीं मैडम जी, आज मुझसे कुछ खाया नहीं जाएगा,'' वह उदास स्वर में बोली।

''क्या बात है शांति, रोज तुम गुनगुनाते हुए काम करती हो, आज उदास लग रही हो, तबियत तो ठीक है ?'' माँ ने पूछा।

''जब मेरे भूरा ने ही कल से कुछ नहीं खाया तो मेरे गले से नीचे खाना कैसे जाएगा,'' शांति ने बताया।

भूरा का नाम सुनते ही विनी और सोनू दौड़कर शांति के पास आए और पूछा, ''काकी क्या हुआ भूरा को ?'' क्योंकि वे दोनों भी रोज भूरा के साथ खेलते थे।

''कल शाम उसे एक बाइक वाले ने टक्कर मार दी, तब से एक पैर को जमीन पर नहीं रख पा रहा है, न ही कुछ खा रहा है,'' शांति ने बताया।

''देखो शांति, तुम खाना पीना छोड़ दोगी तो काम कैसे करोगी और भूरा का ध्यान कैसे रखोगी ?'' माँ ने समझाकर शांति को ब्रेड खिलाई व चाय पिलाई।

जब शांति ने काम खत्म किया तो विनी व सोनू भी उसके साथ भूरा को देखने जा पहुँचे। शांति उनकी गली में कुछ ही दूरी पर रहती थी। भूरा उसके कुत्ते का नाम था। भूरा के अलावा दुनिया में उसका और कोई नहीं था।

कुछ ही देर में भूरा को चोट लगने की खबर मोहल्ले के सारे बच्चों में फैल गई। मोंटी व शिखा भी उसके पास दौड़े चले आए।

भूरा ने एक पैर मोड़ रखा था। उसे छूते ही वह दर्द से कराह उठता था। दो बच्चे दौड़कर

मोहल्ले के डॉक्टर माथुर के क्लीनिक पर जा पहुँचे। और बाकी के बच्चे भूरा के पास बैठकर उसके सिर पर प्यार से हाथ फेरने लगे।

''डॉक्टर साहब, हमारे कुत्ते भूरा को बाइक ने टक्कर मार दी है, उसके पैर में चोट लगी है आप प्लीज चल कर उसे देख लीजिए,'' सोनू ने डॉक्टर साहब से कहा।

डॉक्टर साहब अपने मोहल्ले के बच्चों को अच्छी तरह पहचानते थे। वह बोले, ''बेटा मैं जानवरों का डॉक्टर नहीं हूँ, फिर भी उसके जख्म पर लगाने के लिए दवाई दे देता हूँ।''

''पर उसके पैर में जख्म नहीं है, बस दर्द है और वह कुछ खा नहीं रहा है,'' विनी ने बताया।

''तब तुम एक काम करो, उसे किसी तरह ब्रेड या दूध देकर यह गोली खिला दो, इससे दर्द में आराम आ जाएगा। और विराटनगर में मेरा एक दोस्त डॉक्टर अतुल है, वह जानवरों का डॉक्टर है। उसको मैं फोन कर देता हूँ, तुम अपने कुत्ते को किसी तरह उसके पास ले जाओ।

और बच्चों एक बात का ध्यान रखना – हो सकता है उसके पैर की हड्डी टूटी हो या मोच आयी हो। तुम कोशिश करना कि उसको बहुत संभाल कर उठाया जाये और उस पैर को कम से कम हिलाया डुलाया जाये नहीं तो उसकी चोट बिगड़ सकती है,'' डॉ माथुर ने कहा।

डॉक्टर अतुल का पता और दर्द की गोली ले कर बच्चे वापस भूरा के पास आ गए।

वे अपने घरों से ब्रेड, बिस्किट और दूध ले आए और भूरा के सामने रख दिए, पर वह कुछ नहीं खा रहा था।

बच्चों को भूरा की देखभाल करते देखकर शांति को अच्छा लग रहा था।

''शांति काकी, यह भूरा आपके पास कब से है ?'' शिखा ने पूछा।

''छह–सात महीने पहले की बात है, मैं अपने घर के बाहर यहीं नीम के नीचे चारपाई पर बैठ कर खाना खा रही थी, तब यह छोटा सा पिल्ला था। कूँ–कूँ करता हुआ यह मेरी तरफ देखने लगा। मैंने छोटा सा रोटी का टुकड़ा चूरा करके डाल दिया तो ये लपक कर खा गया। उसके बाद ये अक्सर मेरे खाने के समय आने लगा।''

''धीरे–धीरे मुझे इसका आना अच्छा लगने लगा और मैं इसके लिए रोटी बनाकर रखने लगी। इसके आने से मुझे अकेलापन नहीं लगता था। कुछ महीने बाद एक दिन मैं तनख्वाह के रुपए अपने छोटे से पर्स में रख कर ला रही थी तो एक आदमी मेरा पर्स छीन कर भागा। इससे पहले कि मैं कुछ समझ पाती यह न जाने कहाँ से आया और उस आदमी के पीछे भौंकता हुआ दौड़ा। फिर इसने उसका पजामा अपने मुँह में पकड़ लिया। वह डर के कारण मेरा पर्स फेंक कर भाग गया। तबसे तो यह मेरा अपना सा हो गया। इसका रंग भूरा है इसलिए मैंने इसे भूरा कहकर बुलाना शुरू कर दिया।''

''अब तो यह अधिकतर यहीं बैठा रहता है। मैं इसे दूध तो नहीं दे पाती पर रोटी तो दोनों समय खिलाती हूँ''। काकी यह बता ही रही थी कि विनी खुशी से चिल्लायी, ''देखो, भूरा ने बिस्किट खा लिया!''

यह सुनकर शिखा भी खुश हो गई और बोली, ''अब हम इसे दवाई खिला सकते हैं''।

उन्होंने जल्दी से डॉक्टर की दी हुई गोली पीसकर उसके दूध में मिला दी। बिस्किट खाने के बाद भूरा ने दूध भी पी लिया।

''अब इसका दर्द कम हो जाएगा, फिर हम इसे डॉक्टर अतुल के पास ले जा सकेंगे,'' सोनू खुश होकर बोला।

भूरा को खाता–पीता देखकर शांति के चेहरे पर भी चमक आ गई थी। उसी शाम बच्चे भूरा को रिक्शा में लेकर डॉक्टर अतुल के क्लीनिक पर जा पहुँचे।

''आपको डॉक्टर माथुर ने फोन किया होगा,'' मोंटी ने कहा।

''हाँ हाँ, उनका फोन आया था, मैं अभी इसकी जाँच कर लेता हूँ, क्या हुआ है इसे?'' डॉक्टर अतुल ने भूरा को मेज पर लिटाते हुए पूछा।

''कल शाम एक बाइक वाले ने इसे टक्कर मार दी थी, तब से न पैर छूने दे रहा था, न कुछ खा रहा था,'' बच्चों ने बताया।

डॉक्टर अतुल ने जाँच करके बताया, ''अच्छी बात ये है कि इसकी हड्डी नहीं टूटी है केवल मसल फटी है। मैं क्रेप बैंडेज बांध देता हूँ, इससे इसे आराम मिलेगा। इसे हल्का सा बुखार भी है। यह गोली दे रहा हूँ, इससे दर्द व बुखार में आराम आ जाएगा।''

''डॉक्टर साहब, आप की फीस कितनी हुई?'' बच्चों ने अपनी–अपनी गुल्लक निकालते हुए पूछा।

सब की गुल्लक देखकर डॉक्टर ने हैरानी से पूछा, ''यह तुममे से किसका कुत्ता है?''

''यह हमारा नहीं है, हमारे घर जो शांति काकी काम करती है उनका है। वह तो आपको फीस नहीं दे पाएगी, इसलिए हमने सोचा हम सब मिलकर दे देते हैं,'' विनी ने बताया।

''तब तो मैं इसके इलाज के पैसे नहीं लूँगा। हो सके तो तीन–चार दिन इसे गर्म दूध में हल्दी मिलाकर पिला देना, उससे यह और भी जल्दी ठीक हो जाएगा,'' डॉक्टर ने कहा।

सभी बच्चे खुशी–खुशी भूरा को लेकर लौट आए।

अब तो उनमें हल्दी वाला दूध लाने की होड़ लग गई। सभी बारी–बारी से अपने घर से दूध लाकर उसे पिलाने लगे। कुछ ही दिनों में भूरा पहले की तरह स्वस्थ हो गया और खूब भागने लगा।

यह देखकर शांति के साथ–साथ बच्चों की खुशी का भी ठिकाना नहीं रहा।

■■■

अहंकारी वृक्ष

मधुबाला सिन्हा

घने जंगल में एक पहाड़ी नदी कलकल की मस्ती में बहती रहती थी। उसका पानी इतना साफ और मीठा था कि जंगल के सारे पशु–पक्षी वहाँ जल पीने आते थे।

वहीं नदी किनारे दो आम के वृक्ष भी थे। एक काफी मोटा, घना और छायादार था और दूसरा उसके अपेक्षा पतला, कमजोर और कम घना था। जंगली पशु जल पीकर जब विश्राम करने के लिए वृक्ष की छाया में जाते तो घना वृक्ष उन्हें भगा देता, पर पतला वृक्ष उन्हें आश्रय दे देता। वे कुछ देर छाया में बैठकर फिर चले जाते। पूरे जंगल में घने वृक्ष की शिकायत होने लगी कि वह तो घमंडी है और वही पतले वृक्ष की तारीफ़ होती कि वह बहुत भला है। उड़ते - उड़ते बात जंगल के राजा शेर के कानों में पड़ी। उसने इस बात की परीक्षा लेनी चाही। उसने मधुमक्खियों को घने वृक्ष के पास अपना घर बनाने को भेजा। घने वृक्ष ने जैसे ही मधुमख्खियों को देखा, गुस्सा से चिल्ला उठा, ''भागो यहाँ से, मैं अपने पत्तों के बीच तुम्हें नहीं रहने दूँगा।'' वे डरकर इधर उधर भटकने लगी। तभी पतले वृक्ष ने कहा– ''बहन, तुमलोग मेरी डाली और पत्तों में अपना बसेरा बना सकती हो।''

शेर की परीक्षा पूरी हुई। उसने जंगल में एक बैठक बुलाई और निर्णय लिया कि घने वृक्ष को जंगल में रहने का अधिकार नहीं है। जो दूसरों की मदद नहीं कर सकते, वे हमारे योग्य नहीं हैं। शेर ने हाथियों को निर्देश दिया कि तत्काल घने वृक्ष को जड़ से उखाड़ दिया जाय ताकि उसका अहंकार टूट सके और वह सेवा की भावना का महत्व समझ सके। जैसे ही हाथियों ने घने वृक्ष को उखाड़ना शुरू किया, वह रो-रोकर दुहाई देने लगा, माफी माँगने लगा। राजा शेर ने एक न सुनी और हाथियों का झुंड डाली तोड़ने लगे। यह सब देखकर पतले वृक्ष को बहुत दुःख हुआ। उसने घने वृक्ष की तरफ से राजा शेर से विनती की – ''एक बार माफ कर दीजिए, आगे से यह गलती नहीं करेगा। सबसे प्रेम भाव का वर्ताव करेगा।'' घना वृक्ष भी रो रहा था और माफी माँग रहा था।

शेर ने निर्णय सुनाया कि आगे से मुझे यह शिकायत मिली तो मैं दुबारा नहीं सुनूँगा। सब राजा शेर और पतले वृक्ष की तारीफ करने लगे और घना वृक्ष ने कसम खा ली कि दुबारा वह गलती नहीं करेगा। सबसे आराम से मिलकर रहेगा। एक दूसरे की मदद करेगा। अब घने वृक्ष की डालियों पर भी चिड़ियों का कलरव गूँजने लगा।

■■■

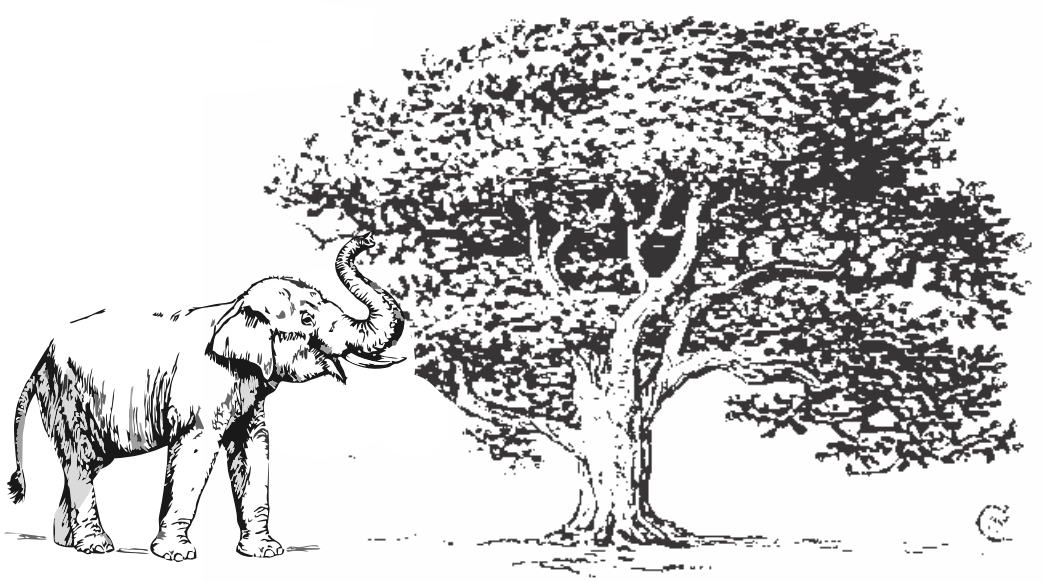

कहानी

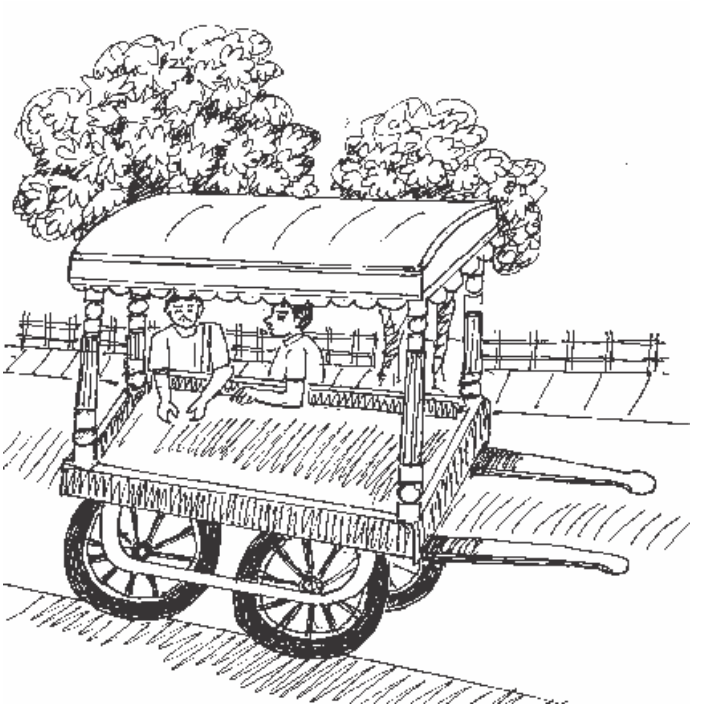

मेरा प्यारा ठेला

संदीप पांडे

''बारहवीं तो खैर जैसे–तैसे पढ़ ली, अब किताब में मन नहीं लगता। सोच रहा हूँ काम धंधा शुरू कर दूँ। क्या कहती हो अम्मी ?'' फिरोज ने तौलिए से बाल पोंछते पूछा। ''देख ले, तुझे जैसा ठीक लगे, तेरे अब्बू तो काम शुरू करने में कोई मदद न दे पाएँगे।'' ''हाँ मुझे पता है अम्मी, मैं सोच रहा हूँ फास्ट फूड का एक ठेला लगा लूँ। चौखटे पे सुबह बहुत सारे मजदूर इक्ट्ठा होते हैं। उनके लिए पोहा और परांठे सस्ते दाम पर खिलाऊँगा। पैसे के साथ थोड़ा पुण्य भी कमा लूँगा।''

''अरे, पर तू शुरू करने के पैसे कहाँ से लाएगा। घर में तो हजार रुपए भी नहीं हैं। कम से कम दस हजार की जरूरत तो पड़ेगी ही पड़ेगी।'' ''हम्म, अजीत अंकल से उधार लेने का सोचा है। रहीम चाचा भी दे सकते है पर अगले महीने शबनम आपा की शादी है। उनसे माँगना ठीक न होगा। एक बार काम जम गया तो आठ दस हजार तो महीने के कमा ही लूँगा। फिरोजा और फखरुद्दीन पढ़ने में ठीक हैं। इनको फिर कोई व्यवधान नहीं आएगा।''

अम्मी अवाक मुँह से फिरोज का चेहरा तक रही थीं। सजल आँखे अचानक बड़े हो गए बेटे पर आशीष बरसा रही थीं।

''यार मदन, मेरे साथ शाम को चल दियो। काम के लिए ठेला तैयार कराया है। उसको तुझे दिखाना भी है और लाने में मदद भी चाहिए।''

''ओहो, तो अब हवाई जहाज उड़ाने के सपने देखने वाला दोस्त, सड़क पर ठेला दौड़ाएगा।'' मदन ने बिना सोचे समझे कह दिया पर फिरोज ने दिल पर नहीं लिया।

बोला, ''हाँ भाई, सपने में तो अब भी जहाज ही उड़ेंगे, जमीन पर चार पहिए ठेले के

ही मजे ले लेते हैं।''

'स्वस्थ भोजन कॉर्नर' ठेले पर सामने टीन के बोर्ड पर लिखा देख मदन और फिरोज कुछ पल एकटक निहारते रहे। फिर 6×4 फीट की सम्पत्ति पर लाड़ बरसाता फिरोज, मदन को समझाने लगा। "देख, यहाँ पर गैस चूल्हा आएगा, यहाँ भगोने और एक बड़ी कढ़ाई रखूँगा। भगोने में सब्जी गरम मिलेगी, कढ़ाई मे पोहे तैयार होंगे। दूसरी तरफ गरम-गरम पाँच तरह के परांठे बनाने की व्यवस्था रहेगी।''

''अबे, इतना सब तू अकेले कैसे संभालेगा। थोड़े दिन तेरी मदद को मैं आ जाऊँगा।''

''नहीं मदन, मेरे काम की आदत तो मुझे ही डालनी पडेगी। मेरे हाथ से बने खाने का जब स्वाद लेना हो तब बाकी यारो के साथ आ जाना।'' फिरोज की आवाज में स्नेह से लिपटा धन्यवाद झलक रहा था।

जुम्मे के दिन सुबह-सुबह ठेला नियत जगह पर पहुँच गया। कुछ लोग पहुँचते ही जिज्ञासावश फिरोज से सवाल करने लगे- हाँ भई, क्या खिला रहे हो? आलू, प्याज, पालक और गोभी परांठा पाँच रूपए, पनीर परांठा दस रूपए। पोहा रतलामी सेव के साथ छह रूपए प्लेट। ''अच्छा जरा बनाओ तो दो पनीर के परांठे। आज टिफिन भई नहीं ला पाए हैं।'' बीस बरस के दो अलमस्त मजदूरों ने पहला आर्डर दे डाला। 'बस पाँच मिनट' बोलकर फिरोज बिजली की गति से हाथ चलाने लगा। पहले से ही तैयार माल को आटे की लोई से परांठे का रूप देने में ज्यादा देर नहीं लगी। अम्मी के साथ अवकाश के दिनों में खाना बनाने में सहयोग करना काम आ रहा था। धनिए, टमाटर की चटनी के साथ, पराठा चार मिनट में ही कागज की प्लेट पर सजकर तैयार था। अगले पाँच मिनट बाहरी मौन और आंतरिक द्वंद के बाद फिरोज के कान ने सुना - "वाह हीरो, क्या स्वाद बनाया है! आत्मा तृप्त हो गई।"

''सुन, अब तो रोज सुबह हम यही खा लिया करेंगे।'' फिर दो धंटे कैसे बीते फिरोज को परांठा बेलते और पोहा लगाते, पता ही नही चला। ग्राहक और थे पर माल सारा खत्म। गल्ला गिना तो दो हजार रूपए!

अम्मी के हाथ जब हजार रुपये रखे तो, वो अवाक फिरोज का मुँह देखती तो कभी पाँच सौ के दो नोट। फिरोज को बाँहों में भरकर अनेक दुआओं से लाद दिया। पहले दिन ने ही फिरोज को आत्मविश्वास से लबरेज कर दिया। एक माह में ही 'स्वस्थ भोजन कार्नरश चौखटे पर चर्चा का विषय बन गया। ठेले को भी फिरोज ने सजा कर नया रूप रंग दे दिया। हर सुबह गुलाब की सुगंध वाली अगरबत्ती चौखटे पर बैठने वाले मजदूरों के लिए भी ऊर्जा का स्रोत बन गई। सामने फूलों की दुकान पर बिकने वाले फूलों से ज्यादा अब मजदूरों को फिरोज का ठेला आकर्षित करता था। आज शहर में कोई समारोह है और फूल की दुकान पर भी बहुत भीड़ है। फिरोज भी भीड़ में फूल चुन रहा है, अपने ठेले को सजाने के लिए।

■■■

कहानी

अपने कर्म अपने हिस्से

कुमार गौरव अजीतेन्दु

नन्हा अथर्व रोज अपने पिता को देखता था- चिड़ियों को दाना डालते, सड़क पर बेसहारा घूमते, जीवों को खाना बाँटते। उसे भी ये सब काम पसंद आने लगे थे, इसलिए वह भी अपने जेबखर्च के पैसे बचाकर बीच-बीच में जीव-जंतुओं को खाना-पानी देने लगा। उसके पिता भी अपने बेटे में अच्छी आदत पड़ती देख बहुत खुश हुए।

एक शाम जब पिता घर में आए तो उन्होंने देखा कि अथर्व अपने स्कूल के दोस्तों के साथ बैठा बातें कर रहा था।

''हमलोग चिड़ियों के लिए खाना लाते हैं, कुत्तों के लिए भी, हमने उनके लिए नहीं किया तो वे कैसे जी पाएँगे।''

पिता उसकी बात से सोच में पड़ गये। दोस्तों के जाने के बाद उन्होंने अथर्व को अपने पास बुलाया और बोले,

''बेटा, हम जीव-जंतुओं को जो भोजन देते हैं, वह उनके लिए नहीं बल्कि अपने लिए देते हैं।''

अथर्व को बात कुछ समझ नहीं आयी। वह बोला, ''पापा, अगर हमने चिड़ियों को खाना नहीं दिया तो वे सब तो मर जाएँगी।''

पापा मुस्कुरा कर बोले, ''ठीक है, दो दिन हम चिड़ियों को दाना नहीं डालेंगे।''

अथर्व तैयार हो गया। दो दिनों तक

उनलोगों ने चिड़ियों और सड़कों पर घूमने वाले किसी जीव को कुछ खाने को नहीं दिया। तीसरे दिन अथर्व ने देखा कि चिड़ियाँ जस की तस पेड़ों पर चहचहा रही हैं, सड़कों पर जानवर भी वैसे के वैसे ही बीच-बीच में दिख रहे। अथर्व ने अपने पापा की ओर जिज्ञासु दृष्टि से देखा। पापा उसके मन की बात समझ गये और हँसकर बोले।

''देखा बेटे, तुम्हारे खाना नहीं खिलाने पर भी सब जीव-जंतु जीवित हैं, इसलिए हमारे ऋषि-मुनियों ने हमें समझाया है कि किसी को कुछ देने के बाद अपने मन में ये भावना नहीं लानी चाहिए कि अमुक व्यक्ति या जानवर हमारे दान से ही पल रहा है, सबको पालने वाले भगवान होते हैं।''

अथर्व को बात समझ आ गयी लेकिन उसके दिल में एक सवाल और था। उसने पूछा, ''लेकिन पापा आपने ये क्यों कहा कि हम चिड़ियों को खाना अपने लिए खिलाते हैं।''

पापा, अथर्व के सिर पर प्यार से हाथ फेरकर बोले, ''वह इसलिए क्योंकि किसी को कुछ देने से हमको शांति और खुशी मिलती है, अपने अंदर एक अच्छी आदत का विकास होता है और जो किसी जरूरतमंद को कुछ देता है, भगवान उसकी झोली हमेशा भर के रखते हैं।''

अथर्व ये सुनकर बहुत खुश हुआ। आज उसे इतनी सुंदर बातें जो सीखने को मिल गयी थीं।

■■■

बाल किलकारी आपके घर

(सदस्यता पत्र)

नाम .....

घर का पता .....

.....

.....

.....

..... पिन .....

फोन .....

मोबाइल .....

ई-मेल .....

प्रिय महोदय,

मैं एक वर्ष/दो वर्ष/तीन वर्ष के लिए 'बाल किलकारी' पत्रिका की सदस्यता चाहता हूँ।

चेक/ड्राफ्ट/मनीआर्डर नं.....

.....

मूल्य .....

बैंक का नाम एवं शाखा .....

.....

.....

शुल्क केवल चेक, बैंक ड्राफ्ट या मनीऑर्डर से

बिहार बाल भवन किलकारी, पटना

के नाम से भेजें।

शुल्क भेजने का पता :

'किलकारी'

बिहार बाल भवन,
सैदपुर, पटना-800 004 (बिहार),
सम्पर्क नं0-9835224919, 7463878822,
फैक्स-0612-2661211,
ई-मेल- publication@kilkaribihar.in,
info@kilkaribihar.in

दक्षिण अफ्रीका में अपने सहयोगियों के साथ बैरिस्टर एम. के. गांधी

बापू ने औरों को भी निडर बनाया

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

महात्मा जी का सार्वजनिक जीवन अफ्रीका में शुरू हुआ। अफ्रीका पहले बसने लायक भूमि नहीं समझा जाता था। धनी गोरे अंग्रेज वहाँ की भूमि को बसने लायक बनाना चाहते थे; किंतु उनके लिए खुद यह काम करना मुश्किल था। अतः वे हिंदुस्तान से लोगों को वहाँ ले जाने लगे। हमारे ही भाई वहाँ जाकर जमीन को तोड़ते-जोतते और रहने-सहने लायक बनाते गए। सच पूछिए तो वह प्रवासी हिंदुस्तानियों का ही देश है। उन्होंने उस बाग को सब्ज बनाया। किंतु आज भी उनकी दशा हमारी ही-सी, बल्कि उससे भी गई-बीती है। महात्माजी जिन दिनों बैरिस्टरी करने के लिए कुछ भारतीय व्यापारियों के यहाँ दक्षिण अफ्रीका गए थे, उन दिनों हिंदुस्तानियों की हालत वहाँ भी बुरी और दर्दनाक थी। ठीक ही है, ये हिंदुस्तानी भाई तो बैल थे! इन्होंने ही दक्षिण अफ्रीका को बसाया और रहने लायक बनाया तो इससे क्या! बैल तो भूमि को जोतते हैं; किंतु वे उसकी फसल के स्वामी थोड़े ही होते हैं। उन्हें तो खटने के बदले कुछ खिला-पिला दिया जाता है। आज भी हमें बैलों से जितनी कड़ी मेहनत लेनी होती है, उसी हिसाब से अच्छी खुराक देते, कम देते या नहीं देते हैं। ठीक उसी तरह दक्षिण अफ्रीका हालाँकि हिंदुस्तानियों का ही बसाया हुआ है और इसलिए उनका ही देश है, फिर भी उन्हें उतने ही अधिकार मिले, जितने से यूरोपियनों के काम निकल सकते थे। गांधी जी जब कुछ भारतीय व्यापारियों के मामले की पैरवी करने लगे तो उन्हें धीरे-धीरे भारतीयों पर होनेवाले अत्याचार

स्पष्ट नजर आने लगे। उन्होंने उनका दुःख दूर करना अपना आवश्यक कर्तव्य समझा। इसलिए उन्होंने विचार किया कि वह जिन मामलों को लेकर आए थे उन्हें खत्म करके ही नहीं लौट जाएँगे, बल्कि वहीं रहकर हिंदुस्तानियों के दुःख दूर करने की कोशिश करेंगे। वह उनकी मुसीबतों की जाँच-पड़ताल करने लगे। उनका नाम फैलने लगा। यूरोपियन उनको संदेह की नजर से देखने लगे।

जब गांधी जी हिंदुस्तान से अफ्रीका के लिए जहाज पर रवाना हुए तो दक्षिण अफ्रीका के यूरोपियनों में बड़ी खलबली मची। वे गांधी जी को न आने देने पर तुल गए और आने पर मार डालने की धमकी देने लगे। इसी बीच महात्मा जी का जहाज बंदरगाह में आ पहुँचा। पहले ही से गांधी जी को न उतरने देने के लिए और उतरने पर मारने-पीटने के लिए लोगों की भीड़ इकट्ठी थी। वहाँ की सरकार तो गांधी जी को बचाना चाहती थी; पर वह बिगड़े हुए लोगों के सामने लाचार थी। बात यह है कि वहाँ की सरकार तो वहीं के यूरोपियनों की अपनी सरकार थी। इसलिए अगर प्रजा ही बिगड़ी हो, तो सरकार उनकी ख्वाहिश के खिलाफ उन्हें कैसे दबाकर कोई काम कर सकती थी? इसलिए जहाज पर ही वहाँ की सरकार की पुलिस का कोई अफसर गांधी जी से मिलने आया और गांधी जी को जहाज पर से न उतरने की सलाह दी। उसने कहा, ''लोग बेतरह बिगड़े हुए हैं और उतरने पर आपकी जान को खतरा है। मैं तो पुलिस का भरसक इंतजाम कर रहा हूँ; किंतु मुझे भय है कि मैं शायद ही आपकी हिफाजत कर पाऊँ। इसलिए मेरी तो सलाह यह है कि चार-पाँच दिन के बाद जब यह जहाज वापस जाएगा तो आप तब तक ठहरकर इसी पर लौट जाएँ।'' किंतु अब तो महात्मा जी का निश्चय और भी पक्का हो चुका था। उन्होंने कहा कि ''मैं तो उतारूँगा ही। क्या होगा, वे ज्यादा-से-ज्यादा मुझे मार डालेंगे? मैं उसके लिए भी तैयार हूँ। मुझे आपकी मदद की भी कोई आवश्यकता नहीं है। मैं अकेला ही उतरूँगा और जरूर उतरूँगा।'' वहाँ की सरकार कानूनी ढंग से उन्हें अपने देश में आने से रोक नहीं सकती थी। इसलिए गांधी जी का उतरना ही तय रहा। गांधी जी ने मन में सोचा कि मैं इनसे क्यों डरूँ? और कोई इनसे कब तक डरे? डरने से तो काम चलेगा नहीं। इसलिए इनसे निर्भय हो जाना ही ठीक है। अधिक-से-अधिक जान चली जाएगी; पर निडर होकर ही दूसरों को भी निडर किया जा सकता है। महात्मा जी उतर पड़े। नतीजा वही हुआ, जिसकी उम्मीद थी। पुलिस उनकी रक्षा न कर सकी। उन पर खूब मार पड़ी और उन्हें बेहोश करके उपद्रवी छोड़कर चलते बने। पुलिस ने उन्हें उठाकर दवा आदि की व्यवस्था की। स्वस्थ होने पर पुलिसवाले उन्हें मुकदमा चलाने को कहने लगे। उन्होंने कहा कि अगर वे उपद्रवियों पर मुकदमा चलाएँ तो पुलिस उन्हें काफी मदद देगी। किंतु गांधी जी ने कहा कि मैं तो अपने को उनका मित्र समझता हूँ। वे अगर मुझे अपना दुश्मन समझें तो मेरा इसमें क्या चारा? मैं तो उन पर किसी तरह का मुकदमा नहीं चलाना चाहता। समय आने पर जब वे मुझे निर्दोष समझ लेंगे तो उन्हें खुद अपनी गलती पर पछतावा होगा। उस दिन से महात्मा जी ने कभी किसी का कुछ भय नहीं किया और दूसरों के भय को भी दूर करते रहे।

('गांधीजी की देन' से साभार)

■■■

महानायक : राजा रवि वर्मा (तीसरी किस्त)

परिकल्पना	सम्पादक	कला एवं आवरण	सम्पादन सहयोग
ज्योति परिहार	शिवदयाल	उमेश शर्मा	सीताराम शरण

प्रकाशक व मुद्रक श्रीमती ज्योति परिहार द्वारा किलकारी बिहार बाल भवन (शिक्षा विभाग, बिहार सरकार), सैदपुर, पटना–800004 से प्रकाशित।

E-Mail : publication@kilkaribihar.in
Mob: 9835224919, 7463878822

सदस्यता शुल्क : व्यक्ति और संस्था के लिए वार्षिक – 200/-

रेन डांस, चक चक धूम समर कैंम्प 2022

'किलकारी'

बिहार बाल भवन

सैदपुर, पटना–800004 (बिहार) भारत

☎ 0612-2661211 9835224919 9142432658

info@kilkaribihar.in, kilkari2008@yahoo.co.in

www.kilkaribihar.in www.facebook.com/kilkaribihar

kilkaribihar.blogspot.com www.youtube.com/kilkaribihar

www.instagram.com/kilkaribihar www.twitter.com/kilkaribihar

पत्रिका यहाँ से भी प्राप्त करें amazon.in